संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

● वर्ष : १२८ ● अंक : १२ ● २३ मार्च, २०२३ (गुरुवार) चैत्र शुक्लपक्ष द्वितीया सम्वत् २०८० ● दयानन्दाब्द १६६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत्:१६६०८५३१२४

युवाओं को सँस्कारित कर राष्ट्र निर्माण के लिए तैयार करता है आर्य समाज

"शराब हटाओ-युवा बचाओ" –देवेंद्रपाल वर्मा

आर्य समाज दौराला मेरठ के 100वें स्थापना दिवस समारोह का भव्य समापन

आर्य समाज दौराला जनपद मेरठ के १००वें स्थापना दिवस समारोह में दिनांक २१ मार्च से चल रहे यजुर्वेद पारायण यज्ञ के समापन के अवसर पर दिनांक २३ मार्च २०२३ को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के यशस्वी प्रधान श्री देवेंद्रपाल वर्मा जी ने मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित आर्य जनों को संबोधित करते हुए कहा कि महर्षि देव दयानंद द्वारा स्थापित आर्य समाज मनुष्य के सर्वांगीण निर्माण की वह फैक्ट्री है, जिसके द्वारा युवाओं को संस्कारित कर राष्ट्र के विकास के लिए तैयार किया जाता है। वर्तमान समय में समाज में फैले पाखंड व कुरीतियों को देखते हुए आर्य समाज की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है अब आर्यों को घर-घर एवं गांव-गांव में जाकर इन बुराइयों के प्रति लोगों में जागरूकता लानी होगी तभी समाज व राष्ट्र की सुरक्षा व विकास संभव होगा।

देश के स्वतंत्रता आंदोलन में ८० प्रतिशत से अधिक बलिदानी व आन्दोलन कर्ता आर्य समाज के थे। जिनमें सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपत राय आदि अनेकों वीर आर्य समाज की ही देन थे। स्वराज्य शब्द का सर्वप्रथम उद्घोष महर्षि ने ही किया था।

सभा प्रधान ने आगे कहा कि आज का युवा वर्ग नशे का आदी होता चला जा रहा है जिससे समाज प्रदेश व राष्ट्र का विकास अवरुद्ध हो गया है। हमें अब "शराब हटाओ-युवा बचाओ" के नारे के साथ एकजुट होकर प्रदेश में पूर्ण शराबबंदी आंदोलन को धार देना होगा। जब गुजरात व बिहार राज्य में शराबबंदी हो सकती है। तो उत्तर प्रदेश में क्यों नहीं। प्रदेश सरकार को युवाओं को पतन रूपी गड्ढे में गिरने से बचाने के लिए नशा मुक्त समाज निर्माण हेतु उत्तर प्रदेश में पूर्ण शराबबंदी शीघ्र लागू करना होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री चरण सिंह शास्त्री जी ने तथा संचालन श्री हरवीर सुमन जी ने किया। विशिष्ट

अतिथिगण श्री राकेश चौहान, श्रीमती सीमा प्रधान, श्री शिवकुमार प्रधान मटौर, चौधरी बलराज सिंह, श्री आर. पी. चौधरी, ठाकुर ओमकार सिंह, श्री रामपाल एडवोकेट थे। यजुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अरविंद बरनावा जी एवं मुख्य यजमान श्री अशोक आर्य व श्रीमती डिंपल जी थे।

समारोह में मुख्य अतिथि सभा प्रधान श्री देवेंद्र पाल वर्मा व विशिष्ट अतिथियों का स्वागत शाल, प्रतीक चिन्ह व पुष्प मालाओं से श्रीमती मिथलेश राणा राजपाल सिंह आर्य डॉ. नीरा तोमर श्री ब्रह्म सिंह ठाकुर बृजपाल सिंह, श्री पुष्पेंद्र व संयोजक समिति के सदस्यों ने किया।

कार्यक्रम में श्रीमती गीता सिंह सर्व श्री रवि शास्त्री, आजाद सिंह महकार, संजीव बंसल, रतन सिंह लाजपत मटौर, रवि राणा, सोहन बिरी, कमलेश, हरबारी, रीटा आदि सैकड़ों धर्म प्रेमी बंधुओं सहित मल्हू सिंह, आर्य कन्या इंटर कॉलेज की छात्रायें व समस्त स्टाफ उपस्थित था। ●●●

वेदामृतम्

परिष्कृण्वन्न निष्कृतं, जनाय यातयन्निषः।
वृष्टिं दिवः परिस्रव।। ऋ. ६.३६.२

जब धरती वर्षा की प्यासी होती है, तब कोटि कोटि कंठों से वर्षा की पुकार होती है। पर यदि भूमि पर झाड़-झंखाड़ उगे हुए हों, तो वर्षा भी बरसकर क्या करेगी ? बरसेगी भी तो उन झाड़ियों को ही बढ़ाने में कारण बनेगी। अतः पहले अपरिष्कृत भू-प्रदेश को परिष्कृत करना आवश्यक होता है। फिर वृष्टि-सिक्त भूमि में बीज-वपन करते है। बीज अंकुरित होने के पश्चात् फिर वर्षा होकर फसल को बढ़ाती है, पनपाती है। यह तो है आकाश से होनेवाली भौतिक वर्षा की बात पर मेरी मनोभूमि भी तो आज आध्यात्मिक वर्षा की प्यासी हो रही है। हे वर्षा के अधिपति रसागार सोम प्रभु ! तुम मेरे मानस में आनन्द-रस की वर्षा करो।

किन्तु मेरी मनोभूमि में जो प्रमाद, आलस्य, तन्द्रा, उदासीनता, अनुत्साह, अविद्या अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश आदि का कूड़ा-करकट जमा है, पहले उसे साफ किए जाने की आवश्यकता है। हे पवित्रता सम्पादक सोम प्रभु ! तुम्हारी सहायता के बिना तो में अपनी अपरिष्कृत मनोभूमि को परिष्कृत करने में भी स्वयं को अशक्त पा रहा हूँ। तुम मेरे अन्दर ऐसी पवित्रता की आँधी चलाओ जो अपने साथ समस्त हृदय-मालिन्य को बहा ले जाए तथा अन्तःकरण को पूर्णतः निर्मल और परिष्कृत कर दे। तदनन्तर मुझे इष का अधिपति बनाने के लिए, मेरी मनोवांछित अध्यात्म-सम्पत्ति मुझे प्राप्त कराने के लिए तुम अपने सहारे को अक्षुण्ण रखते हुए मुझसे प्रयत्न करवाओ, उग्र तप करवाओ। सतत प्रयत्न और तप के परिणामस्वरूप मेरे अन्दर अहिंसा, धृति, क्षमा, अस्तेय, इन्द्रिय-निग्रह, सात्त्विकता, आदि अभीष्ट गुणों का अभ्युदय होगा। उसके पश्चात् ही मैं तुम्हारी दिव्य वृष्टि से सिक्त होने का अधिकारी बनूंगा। तब तुम मेरी सुपरिष्कृत तथा अभीष्ट दिव्य गुणों से अंकुरित मनोभूमि पर अध्यात्म-लोक से या आनन्दमय कोश से दिव्य आनन्द-रस की वर्षा करना। तब मेरे आत्मा, मन, बुद्धि, प्राण, ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, सब अंग-प्रत्यंग उस रस से स्नात होकर नवीन स्फूर्ति और चैतन्य का अनुभव करेंगे। ताप से सन्तप्त मनुष्य शीतल वर्षा से नहाकर जिस अह्लाद का अनुभव करता है, उससे सहस्रगुणित आह्लाद की गुझे अनुभूति होगी। हे रस-सिंधु पवमान सोम ! अपनी शीतल, दिव्य, मनःभावनी दृष्टि से मुझे कृतकृत्य करो।

साभार-वेदमंजरी

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

"आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर"

माननीय श्री अमित शाह जी मुख्य अतिथि

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की २००वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में आयोजित दिनांक २१ मार्च २०२३ को सायं नई दिल्ली के लाल कटोरा इनडोर स्टेडियम में चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा विक्रमी संवत २०८० के शुभ दिन आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भारत के यशस्वी गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय अमित शाह जी का भव्य स्वागत किया गया माननीय श्री अमित शाह जी ने मुख्य अतिथि के रूप में विशाल आर्य जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी देश में जो जागरण का कार्य कर रहे हैं उसकी प्रेरणा उन्हें महर्षि दयानंद के जीवन व कार्यों से मिलती है महर्षि दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना करके सदियों से सोई हुई इस देश की आत्मा को जगाने एवं वेदों का उद्धार करके किया आर्य समाज पूर्वोत्तर के वनवासी क्षेत्रों में महर्षि के विचारों के द्वारा शिक्षा क्रांति यज्ञ कर रहा है भारत की आजादी का इतिहास महर्षि दयानंद और आर्य समाज के योगदान का उल्लेख किए बिना नहीं लिखा जा सकता नमस्ते रूपी अभिवादन भी महर्षि की ही देन है इससे पूर्व माननीय श्री अमित शाह जी ने देव यज्ञ में आहुतियां अर्पित की

इस अवसर पर महामहिम आचार्य देवव्रत जी, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, श्री पूनम सूरी जी, श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, श्री गंगा प्रसाद जी, (पूर्व राज्यपाल), स्वामी प्रणवानंद सरस्वती जी, डॉ. अशोक कुमार चौहान जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री सुरेंद्र कुमार राली जी, श्री प्रकाश आर्य जी, श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री राधाकृष्ण आर्य जी, श्री सतीश चंद्र चड्ढा जी, श्री योगेश मुंजाल जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, श्री विद्या मित्र ठाकुर जी, श्री राकेश ग्रोवर जी, श्री विकास आर्य जी आदि सहित संपूर्ण भारत से पधारे आर्य नर-नारी की गरिमामई उपस्थिति थी।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

भारत का राष्ट्रीय दिवस चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा सृष्टि मानव एवं वेदोत्पत्ति दिवस संवत् 2080

परमपिता ने आज से १९६०८५३१२४ वर्ष पूर्व सृष्टि रचना के साथ-साथ मनुष्य की रचना इस पवित्र धरती पर की थी मनुष्य के सम्यक जीवन के संचालन हेतु वेद ज्ञान का प्रादुर्भाव चार ऋषियों के अंतः करण में किया। वास्तव में देखा जाए तो वेद ही भारत का राष्ट्रीय संविधान है। समय की आवश्यकता अनुसार अनेक आर्ष ऋषि मुनियों ने वेद के भाष्य के रूप में उपनिषद आरण्यक स्मृति ग्रंथों रामायण और महाभारत आदि इतिहास के ग्रंथों की रचना की। ''वेदोऽखिलोधर्ममूलम्'' वेद ही अखिल विश्व में धर्म के मूल हैं मनुष्य के कर्तव्यों का मुख्य संदेशवाहक है भारत के लोग जबसे वेदों से दूर हुए उनकी उन्नति विकृत रूप में बाधित हो गई। इन्हीं विकृतियों के कारण हम हजारों वर्ष गुलाम रहे।

कुछ युग पुरुषों की प्रेरणा व प्रयास से राष्ट्र में पुनः सद्वृत्तियों का उदय हुआ जिसके परिणाम स्वरूप हम १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्र हुए सन १८५७ से १९४७ के ९० वर्षों का कालखंड कड़े संघर्ष व बलिदानों का रहा जिसकी शुरुआत युग दृष्टा योगी देव दयानंद सरस्वती ने की थी राष्ट्रीय पर्व के रूप में १५ अगस्त व २६ जनवरी को क्रमशः स्वाधीनता वा गणतंत्र दिवस के रूप में सम्मानजनक स्थान दिया गया। लेकिन स्वतंत्र भारत के नेता गणों ने लार्ड मैकाले के षड्यंत्र (शिक्षा पद्धति) को न समझ कर अज्ञानता का आवरण ओढ़ लिया। जिसका परिणाम आज हमारे सामने है। हमारे युवा भ्रमित होकर अपने गौरवशाली इतिहास व संस्कृति को भूल बैठे हैं और पाश्चात्य रंग में रंग गए हैं काले अंग्रेज भारतीय संस्कृति व सभ्यता को हेय दृष्टि से देखते हैं यही नहीं हमने ''धर्म निरपेक्ष'' जैसे अस्पष्ट वह भ्रमित विचार को अपनाकर पंथ संप्रदाय जातियों आदि पर नियम कानून बनाकर अपनी विश्ववारा भारतीय संस्कृति के साथ विश्वासघात किया है जबकि हमारी आर्ष संस्कृति किसी पंथ मत मजहब के विरुद्ध ना होकर धरती के समस्त प्राणियों के कल्याण का संदेश देती है। हजारों वर्ष पुराना इतिहास इसका ज्वलंत प्रमाण है हमारे महापुरुष व ऋषि मुनि इसके मूर्तिमान गवाह हैं उनका अनुसरण स्मरण हमें सदैव प्रगति के पथ पर ले जा सकता है हमारा दीर्घकालीन इतिहास अमिट प्रेरणा का स्रोत है।

प्रतीकात्मक दृष्टिकोण से इन सभी को स्मरण करने के लिए प्रति वर्ष प्रतिपदा चैत्र शुक्ल पक्ष को भारत के राष्ट्र दिवस के रूप में मनाना उचित है। प्रकृति का अनुपम सौंदर्य लिए नई सृष्टि देश में प्रचलित सभी संवतों का पहला दिन तो है ही लेकिन ऐतिहासिक घटनाओं से भी जुड़ा है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ था, महाराजा विक्रमादित्य की दिग्विजय के रूप में उनके संवत का चलना। ''कृण्वंतो विश्वमार्यम्'' का जयघोष करने वाले महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज का स्थापना दिवस, संविधान निर्माता बाबा भीमराव आदि का जन्मदिन भी यही प्रतिपदा है।

चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा भारत की राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है इस शुभ दिन को भारत के राष्ट्र दिवस के रूप में स्थापित कर हम अपने सनातन वैदिक परंपरा का पुनः बोध कर सकते हैं।

इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेद भाष्य भूमिका की वेदोत्पत्ति विषय में शतपथ कांड-१४/अ. ५ का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि- ''याज्ञवल्क्य महाविद्वान् जो महर्षि हुए हैं, वह अपनी पंण्डिता मैत्रीय स्त्री को उपदेश करते हैं कि हे मैत्रेयि। जो आकाशादि से भी बड़ा सर्वव्यापक परमेश्वर है, उससे ही ऋक् यजुः साम और अथर्व ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं, जैसे मनुष्य के शरीर से श्वांस बाहर को आके फिर भीतर को जाती है, इसी प्रकार सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है, और प्रलय में संसार में वेद नहीं रहते, परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे सदा बने रहते हैं, बीजांकुरवत् जैसे बीज में अंकुर प्रथम ही रहता है, वही वृक्षरूप होके फिर भी बीज के भीतर रहता है, इसी प्रकार से वेद भी ईश्वर के ज्ञान में सब दिन बने रहते हैं, उनका नाश कभी नहीं होता, क्योंकि वह ईश्वर की विद्या है, इनको नित्य ही जानना।।''

इस राष्ट्रीय पर्व पर सभी प्रदेश के सभी आर्य जनों को हार्दिक शुभेच्छा व बधाई।

-सम्पादक

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ त्रयोदश समुल्लास

अथ कृश्चीनमत विषयं व्याख्यास्यामः

(समीक्षक) वाह! अच्छा आधी रात को डाकू के समान निर्दयी होकर ईसाइयों के ईश्वर ने लड़के बाले, वृद्ध और पशु तक भी विना अपराध मार दिये और कुछ भी दया न आई और मिस्र में बड़ा विलाप होता रहा तो भी ईसाइयों के ईश्वर के चित्त से निष्ठुरता नष्ट न हुई! ऐसा काम ईश्वर का तो क्या किन्तु किसी साधारण मनुष्य के भी करने का नहीं है। यह आश्चर्य नहीं, क्योंकि लिखा है 'मांसाहारिणः कुतो दया' जब ईसाइयों का ईश्वर मांसाहारी है तो उसको दया करने से क्या काम है ? ।।४२।।

४३- परमेश्वर तुम्हारे लिये युद्ध करेगा। इसराएल के सन्तान से कह कि वे आगे बढ़ें। परन्तु तू अपनी छड़ी उठा और समुद्र पर अपना हाथ बढ़ा और उसे दो भाग कर और इसराएल के सन्तान समुद्र के बीचों बीच से सूखी भूमि में होकर चले जायेंगे।।

-तौ० या० प० १४ आ० १४ १५ १६।।

(समीक्षक) क्यों जी! आगे तो ईश्वर भेड़ों के पीछे गड़रिये के समान इस्त्रायेल कुल के पीछे-पीछे डोला करता था। अब न जाने कहां अन्तर्धान हो गया ? नहीं तो समुद्र के बीच में से चारों ओर की रेलगाड़ियों की सड़क बनवा लेते जिससे सब संसार का उपकार होता और नाव आदि बनाने का श्रम छूट जाता। परन्तु क्या किया जाय, ईसाइयों का ईश्वर न जाने कहाँ छिप रहा है? इत्यादि बहुत सी मूसा के साथ असम्भव लीला बाइबल के ईश्वर ने की हैं परन्तु यह विदित हुआ कि जैसा ईसाइयों का ईश्वर है वैसे ही उसके सेवक और ऐसी ही उसकी बनाई पुस्तक है। ऐसी पुस्तक और ऐसा ईश्वर हम लोगों से दूर रहै तभी अच्छा है।। ४३।।

४४- क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर ज्वलित सर्वशक्तिमान् हूं। पितरों के अपराध का दण्ड उनके पुत्रों को जो मेरा वैर रखते हैं उनकी तीसरी और चौथी पीढ़ी लों देवैया हूं।।

-तौ० या० प० २० । आ० ५।।

(समीक्षक) भला यह किस घर का न्याय है कि जो पिता के अपराध से चार पीढ़ी तक दण्ड देना अच्छा समझना। क्या अच्छे पिता के दुष्ट और दुष्ट के अच्छे सन्तान नहीं होते ? जो ऐसा है तो चौथी पीढ़ी तक दण्ड कैसे दे सकेगा ? और जो पांचवीं पीढ़ी से आगे दुष्ट होगा उसको दण्ड न दे सकेगा। विना अपराध किसी को दण्ड देना अन्यायकारी की बात है।।४४।।

४५ - विश्राम के दिन को उसे पवित्र रखने के लिये स्मरण कर।। छः दिन लों तू परिश्रम कर।। परन्तु सातवां दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर का विश्राम है। परमेश्वर ने विश्राम दिन को आशीष दिई।। -तौ० या० प० २०। आ० ८।९।१०।११।।

क्रमशः अगले अंक में...

दयानन्द शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर-संग्रह

शास्त्रार्थ-बरेली - (ईश्वर पाप को क्षमा भी करता है)

ता. 27 अगस्त, सन् 1879ई.

पादरी टी. जी. स्काट साहेब-

अब विचार करने वाले भाई विचार कर, क्योंकि इस लिखाई के बीच में शास्त्रार्थ के नियमों के विरुद्ध बहुत सी बातें कही गई हैं और वे लिखी नहीं गईं। इसका परिणाम वही हुआ है कि जिसके ऊपर झगड़ा हुआ अर्थात् केवल अर्थ मिलाने के लिए मैं एक वाक्य सुनाना चाहता था। परन्तु मैंने यह आवश्यक न समझा कि लिखने वाले से उसे लिखने के लिए भी कहूँ। अब मैं केवल उस प्रमाण का ही उल्लेख करता हूँ। भाषा के शब्दों का विचार मैं न करूगा। जो चाहें वे पुस्तक में स्थल को निकाल कर देख लें । हाँ, यह मैं लिखवा दूंगा कि मैं प्रमाण किस उद्देश्य से देता हूँ। पण्डित जी का यह कहना कि मेरी दलील पक्की नहीं है, और मैंने यूँ सिद्ध किया है, इत्यादि । इसमें भी सार नहीं है। मैं भी इस प्रकार कह सकता हूँ। अब यह सुनने वालों का काम है कि वे विचार करके, स्वयमेव निर्णय करें। और यह भी स्मरण रखना चाहिए कि मैं यह नहीं चाहता कि इस विषय में किसी प्रकार का पक्षपात किया जाये ।

पण्डित जी ने इस बात का कुछ उत्तर नहीं दिया कि ''क्षमा'' शब्द को संसार से बहिष्कृत क्यों नहीं कर दिया जाता। यह एक व्यर्थ और हानिकारक शब्द है । इससे सदा सबकी हानि ही होती है, यदि पंडित जी के कथनानुसार यही बात है तो बहिष्कार जरूरी है। मैं तो निस्सन्देह यह कहता हूँ कि क्षमा करने से भगवान् की महिमा का प्रकाश होता है। ईश्वर की बड़ाई इसी में है कि वह मनुष्य को क्षमा करे क्योंकि मैंने कहा कि वह सब गुप्त भेदों को भी यथावत् जानता है। और क्षमा करने के देश, काल तथा पात्र को भी भली प्रकार जानता है। और क्षमा करने के कारणों को भी पूर्णतया जानता है । ईश्वर के घर में न तो कुछ कमी है और न ही किसी प्रकार की भूल या भ्रान्ति की कोई सम्भावना है। ये सब कमियां और त्रुटियां इस संसार में ही हैं ।

देखो, संसार में कितना पाप, अन्याय, घमण्ड और रक्तपात तथा अनेक विध अनाचार दृष्टिगोचर हो रहा है। पंडित जी इसे स्वीकार नहीं करेंगे, परन्तु प्रत्यक्ष ही संसार में भारी कमी और त्रुटि देखने में आ रही है। जैसा कि अंग्रेजी सरकार ने इसका यथोचित प्रबन्ध किया है, ईश्वर भी इसका प्रबन्ध करेगा ।

मैं निःसन्देह मसीह के विषय में कोई वार्ता न चलाऊंगा। मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि इस पवित्र धर्म-ग्रन्थ में जिसको क्षमा करने का उल्लेख है, वह उसी वसीले से है। यह दर्द का जिक्र तो है परन्तु दर्द का विवरण यह नहीं है कि कहाँ-कहाँ, कैसे-कैसे है ? जब कभी इस विषय पर वार्ता चलेगी, तब आप इसे यथार्थ रूप में देख लेंगे । युक्ति और प्रमाण के आधार पर मेरा निवेदन यही है कि क्षमा होती है।

और तोबा के सिद्धान्त से भी यही प्रमाणित होता है कि क्षमा होती है । उपाय को खूब जानना और ईश्वरीय पुस्तक के विषय में इस प्रकार से हंसी-ठट्ठा करना यदि पंडित जी को उचित प्रतीत होता है और वे प्रत्येक बात को उलटे रूप में ही समझना चाहते हैं तो वे जाने । वेद की अनेकानेक बातें हैं। परन्तु यहाँ उनके विषय में मैं विशेष कुछ कहना नहीं चाहता। अब आप मेरे इन उत्तरों को कृपया देख लीजिये-

गिनती की पुस्तक अध्याय १४ आयत १८ का अर्थ इस प्रकार है कि ईश्वर पापों को क्षमा करता है।

लूका की इंजील अध्याय ६, आयत ४ तथा अध्याय १५ और आयत १०, इसी प्रकार योहन्ना का पहला पत्र अध्याय १ आयत ६ इनका अर्थ यह है कि पापों को क्षमा किया जाता है। फिर मसीह ने अपने चेलों को समझाया कि अपनी प्रार्थना में इस प्रकार से बोलो- ''हे ईश्वर हमारे पापों को क्षमा कर।।''

अब अनुभवसिद्ध प्रमाण पर भी विचार कीजिए। अनुभव के आधार पर सत्य को जानना बहुत बड़ी बात है और अपना अनुभव सत्यासत्य का निर्णय करने की सबसे बड़ी कसौटी है। मनुष्य कह सकता है कि मेरा पाप क्षमा किया जाये और इसके साथ ही ऐसा कथन निराधार हैं क्योंकि जैसे पंडित जी ने स्वयं भी एक उदाहरण में बताया है कि प्रत्येक पापी को दण्ड अवश्य ही मिलेगा। वह पाप भी है, फिर जब तोबा-तोबा कहा तब भी वही पाप मौजूद है। फिर खुदा के बेटे का नाम लिया तब भी पाप वर्तमान है। मैं यह मान लेता हूँ कि मनुष्य मिथ्या-कथन करें ।

कल्पना करो कि वे सच्ची तोबा करके सन्मार्ग पर आ जायेंगे और प्रत्यक्ष देख भी लें कि अब वह पहले जैसी बात नहीं है। अब मन में संतोष है। और शान्ति है। प्रकाश ही प्रकाश है । न कोई सन्देह है, न चिन्ता है और न ही कोई आशंका है । अब देख लीजिये कि ऐसे हजारों आदमी संसार में हैं कि जिनका यही अनुभव है और उन्होंने अपने अनुभव से यह भली प्रकार जान लिया ईश्वर ने मेरे पापों को क्षमा कर दिया है । वे अव पूर्णतया सन्तुष्ट है। उनक हृदय पर न तो पाप की छाप शेष है और न ही पाप का कोई भार है। पापाचरण की किसी प्रकार की इच्छा वा कल्पना भी नहीं है। एक क्षणमात्र में हृदय परिवर्तन हो गया है।

मेरी ओर से इंजील के अनुसार प्रमाण मिल चुका है। यह कहना बहुत ही आसान है कि यह मिथ्या है ऐसा है । और ऐसा नहीं, परन्तु जानने वाले जानते हैं। जिसका दर्द सर्वथा चला गया है, वह जानता है, परन्तु मेरे धर्म के मानने वाले इकतालीस करोड़ ईसाई संसार में हैं उनमें से बहुत से तो झूठे ही हैं, यह मैं स्वीकार करता हूँ उनका कथन भी झूठ ही है।

परन्तु सच्चे आदमी भी बहुत हैं और उनका कथन भी पूर्णतया यथार्थ है, सत्य है। उनकी जीवनचर्या से यह भलीभान्ति प्रमाणित हो जाता है उनके सब पाप सर्वथा लुप्त हो चुके हैं। उनके पापों को क्षमा किया गया है । हां इसको जानने और समझने के लिये अपना अनुभव होना भी आवश्यक है । यह कार्य अभ्यास से होगा।

मैं फिर कहता हूँ कि वह अपने अनुभव का प्रमाण, सबसे बढ़कर और पक्का प्रमाण है । युक्ति और तर्क की पुष्टि से भी बढ़कर यह पुष्टि है कि जिसको अनुभव के आधार पर अपना अन्तरात्मा भी पुष्ट करता है। बात यह नहीं कि हम केवल मौखिक कथनमात्र ही करते हैं, ऐसा कथन तो मिथ्या भी हो सकता है । परन्तु जिसके पाप तोबा करने के बाद अपना अस्तित्व सर्वथा खो चुके हैं कि वह नहीं जानता कि जैसे कि कोई पिता अपने पुत्र से क्षमा का वचन कहे तो क्या वह पुत्र यह नहीं समझता कि पिता ने उसे क्षमा कर दिया है और सब चिन्ताओं की कोई आवश्यकता नहीं है। मानव-हृदय की भी इसी प्रकार अवस्था है ।

मैंने तर्क, युक्तियों और शास्त्रीय प्रमाणों के द्वारा तथा मनुष्यों के अपने प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर, यह सिद्ध कर दिया है कि ईश्वर पापों को क्षमा करता है। -हस्ताक्षर पादरी टी. जी. स्काट साहेब

(लेखराम पृ.४४६-४७०)

आर्यसमाज के भूषण पण्डित गुरुदत्तजी के अद्भुत जीवन का कारण क्या था?

-राज्यरत्न आत्माराम अमृतसरी

प्रेषक-प्रियांशु सेठ, डॉ.विवेक आर्य

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के सच्चे भक्त विद्यानिधि, तर्कवाचस्पति, मुनिवर, पण्डित गुरुदत्त जी विद्यार्थी, एमद्गएद्ग का जन्म २६ अप्रैल सन् १८६४ ई० को मुलतान नगर में और देहान्त २६ वर्ष की आयु में लाहौर नगर में १९ मार्च सन् १८९० ई० को हुआ था।

आर्य जगत् में कौन मनुष्य है, जो उनकी अद्भुत विद्या योग्यता, सच्ची धर्मवृत्ति और परोपकार को नहीं जानता? उनके शुद्ध जीवन, उग्र बुद्धि और दंभरहित त्याग को वह पुरुष जिसने उनको एक बेर भी देखा हो बतला सकता है। महर्षि दयानन्द के ऋषिजीवन रूपी आदर्श को धारण करने की वेगवान् इच्छा, योग समाधि से बुद्धि को निर्मल शुद्ध बनाने के उपाय, और वेदों के पढ़ने पढ़ाने में तद्रूप होने का पुरुषार्थ एक मात्र उनका आर्य जीवन बोधन कराता है। अंग्रेजी पदार्थविद्या तथा फिलासोफी के वारपार होने पर उनकी पश्चिमी ज्ञानकाण्ड की सीमा का पता लग चुका था। जब वह पश्चिमी पदार्थविद्या और फिलासोफी के उत्तम से उत्तम पुस्तक पाठ करते थे, तो उनको भलीभांति विदित होता था कि संस्कृत विद्या के अथाह समुद्र के सन्मुख अंग्रेजी तथा पश्चिमी विद्या की क्या तुलना हो सकती है? एक समय लाहौर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर उन्होंने अंग्रेजी में व्याख्यान देते हुए ज्योतिष शास्त्र और सूर्य सिद्धान्त की महिमा दर्शाते हुए, यह वचन कहे थे कि संस्कृत फिलासोफी का वहां आरम्भ होता है, जहां कि अंग्रेजी फिलासोफी समाप्त होती है। वह कहा करते थे कि पश्चिमी विद्याओं में पदार्थविद्या उत्तम है और यह पदार्थविद्या तथा इसकी बनाई हुई कलें बुद्धि बल के महत्व को प्रकट करती हैं, इन कलों से भी अद्भुत विचारणीय पश्चिमी पदार्थविद्या के बाद हैं, परन्तु वह सर्व वाद वैशेषिक शास्त्र के आगे शान्त हो जाते हैं। वह कहते थे कि कणाद मुनि से बढ़कर कोई भी पदार्थविद्या का वेत्ता इस समय पृथिवी पर उपस्थित नहीं है। कई बेर उनको आर्य्यसज्जनों ने यह कहते हुए सुना कि मैं चाहता हूं कि पढ़ी हुई अंग्रेजी विद्या भूलजाऊँ, क्योंकि जो बात अंग्रेजी के महान् से महान् पुस्तक में सहस्र पृष्ठ में मिलती है, वह बात वेद के एक मन्त्र अथवा ऋषि के एक सूत्र में लिखी हुई पाई जाती है। वह कहते थे कि जो ''मिल'' ने अपने न्याय में सिद्धान्त रूप से लिखा है वह तो न्यायदर्शन के दो ही सूत्रों का आशय है। एक बेर उन्होंने कहा कि हम एक पुस्तक लिखने का विचार करते हैं जिसमें दर्शायेंगे कि भूत केवल पांच ही हो सकते हैं न कि ६४ जैसा कि वर्तमान समय में पश्चिमी पदार्थवेत्ता मान रहे हैं।

सन् १८८९ के शीतकाल में, मैं और लाला जगन्नाथ जी उनके दर्शनों को गये। वह उस रोग से जो अन्त को उनकी मृत्यु का कारण हुआ ग्रसे जा चुके थे। हम ने पूछा कि पण्डित जी आप प्रेम तथा विद्या की मूर्ति होने पर क्यों रोग से पकड़े गए? उत्तर में मुस्कराते हुए सौम्य दृष्टि से हम दोनों को कहने लगे कि क्या आप समझते हो कि स्वामी जी की महान् विद्या और उनका महान् बल मेरी इस मलीन बुद्धि और तुच्छ शरीर में आ सकता है, कदापि नहीं। ईश्वर मुझे इस से उत्तम बुद्धि और उत्तम शरीर देने का उपाय कर रहा है, ताकि मैं पुनर्जन्म में अपनी इच्छा की पूर्ति कर सकूं। यह वचन सुनकर हम आश्चर्य सागर में डूब गए और एक एक शब्द पर विचार करने लगे। पुनर्जन्म को तो हम भी मानते थे पर पुनर्जन्म का अनुभव और उसकी महिमा उनके यह वचन सुनकर ही मन में जम गई। स्थूलदर्शी जहां रोगों से पीड़ित होने पर निराशा के समुद्र में मूर्छित डूब जाते हैं, वहां तपस्वी पण्डित जी के यह आशामय वचन कि मृत्यु के पीछे हमें स्वामी जी के ऋषिजीवन धारण करने का अवसर मिलेगा कैसे सारगर्भित और सच्चे आर्य जीवन के बोधक हैं।

जबकि वह रोग से निर्बल हो रहे थे तो एक दिन कहने लगे के हमारा विचार है, कि एक व्याख्यान इस विषय पर दें कि मौत क्या है? मृत्यु कोई गुप्त वस्तु नहीं है। लोग मौत से व्यर्थ भय करते हैं। यह सच है कि पण्डित जी से ईश्वर उपासक और धार्मिक, योगाभ्यासी के लिए मौत भयानक न हो, परन्तु वह मनुष्य जो ऐसी उच्च अवस्था को नहीं प्राप्त हुआ वह क्योंकर अपने मुख से कह सकता है कि मौत भयानक नहीं है? पण्डित जी ने इस वाक्य को अपनी मौत पर जीवन में सिद्ध कर दिखाया। श्रीयुत लाला जयचन्द्र जी तथा भक्त श्रीपण्डित रैमलजी, जो बहुधा उनके पास रोग की अवस्था में रहते थे वह उनकी मृत्यु से निर्भय होने की साक्षी भली प्रकार दे सकते हैं। रोग की दशा में जब कि उनको रात को खांसी जोर से आने लगती अथवा ज्वर अपना बल दिखाता, तो वह कभी भी ऐसी अवस्था में मुख से पीड़ा बोधक वचन नहीं निकालते थे, किन्तु धैर्य्य से दुःख सहन करते थे, और यदि कोई पूछता कि पण्डित जी क्या हाल है? तो केवल इतना ही कह देते कि खांसी हो रही है। एक बेर मैं रोग से ग्रसित होने के हेतु कई दिन तक पण्डित जी के दर्शनों को न जा सका। एक दिन जब मैं उनके गृह पर (स्वयं आरोग्य होने पर) गया तो उनकी खाट के पास जाकर चुप चाप बैठा रहा। पण्डित जी रोगी होने के कारण दिन को सो रहे थे, इतने में जब उनकी आंख खुली तो बड़ी धीमी स्वर से मुझे पूछने लगे कि आप के शरीर की क्या अवस्था है? मैंने उत्तर दे दिया। वह निर्बल और रोग से विशेष ग्रसित होने के कारण उच्च स्वर से नहीं बोल सकते थे, तो भी उन्होंने दो-चार बातें मुझसे कीं। वह तो इस दशा में मुझसे बातें करते थे पर मेरा मन उनके अत्यन्त प्रेम को अनुभव करता हुआ यह कह रहा था कि इनसे बढ़कर प्रेम कौन अपने जीवन से सिद्ध करके दिखा सकता है? लोक में देखने मे आता है, कि विद्वान् प्रेम से शून्य शुष्क हुआ करते हैं। काशी के पण्डित तक तो ईर्षा द्वेष से बद्ध होकर अक्षरार्थ में अपने तुल्य पण्डितों को मूर्ख सिद्ध करने में रुचि प्रकट करते हैं। एक विद्वान् दूसरे विद्वान् की प्रशंसा सुन नहीं सकता। एक उपदेशक दूसरों को ईर्षा की दृष्टि से देखता हुआ जीवन में धर्म अथवा प्रेम का लेश चिन्ह नहीं दिखा सकता, परन्तु यह बात पण्डित जी में न थी। उनको यदि विद्या बल के कारण ''पण्डित'' और ''एम.ए.'' की पदवी मिली थी, तो प्रेम परीक्षा में उत्तीर्ण होने और प्रेम बल रखने के कारण, ''एल.एल.डी.'' और ''महान् पण्डित'' की पदवी दी जाए तो सत्य है। उन्होंने ही अपने जीवन से सिद्ध करके दिखाया कि मनुष्य भारी विद्वान् होने पर ईर्षा द्वेष से इस समय भी रहित हो सकता है। उनको कई बेर आर्य सभासदों ने आर्य पुरुषों की प्रशंसा करते हुए सुना।

एक बेर लाहौर समाज की धर्मचर्चासभा में ''वर्तमान समय की विद्या प्रणाली'' के विषय में विचार होना था। इस वाद में कई बी.ए., एम.ए. भाई अंग्रेजी विद्या तथा वर्तमान समय की विद्या प्रणाली की उत्तमता दर्शाने का यत्न करते रहे। अन्त को पण्डित जी ने ''मातृमान् पितृमानाचार्य्यमान् पुरुषो वेद'' की प्रतीक रखकर एक अद्भुत और सारगर्भित रीति से उक्त वचन की व्याख्या करते हुए लोगों को निश्चय करा दिया कि अंग्रेजी विद्या भ्रान्ति युक्त होने से विद्या ही कहलाने के योग्य नहीं है और वर्तमान शिक्षा प्रणाली शिर से पग तक छिद्रों से भरपूर है। उनका एक वचन कुछ ऐसा था कि ''Modern System of Education is rotten from top to bottom-''

एक समय इसी प्रकार धर्मचर्चा के अन्त में जबकि लोग ''वक्तृता'' के विषय में वाद विवाद कर चुके तो पण्डित जी ने अपने व्याख्यान में यह सिद्ध किया कि सत्य कथन ही का दूसरा नाम अद्भुत वक्तृता है।

जब कभी वह आर्य सभासदों को अपने नाम के पीछे अपनी जाति लिखते हुए देखते तो वह रोक देते थे, यह कहते हुए कि यह जाति की उपाधि किसी गुण कर्म की बोधक नहीं किन्तु रूढ़ी है और साथ ही कहते थे कि वर्ण तो गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल चार हो सकती हैं।

जब कभी वह हमें सुनाते कि यूरोप में अमुक नवीन वाद किसी विद्या विषय में निकला है, तो अत्यन्त प्रसन्न होकर साथ ही कहते कि यूरोप सत्य के निकट आ रहा है यदि कोई उनको ही कहता कि पण्डित जी यूरोप तो उन्नति कर रहा है, तो कहते कि भाई वेद के निकट आ रहा है। सत्य नियम की उन्नति कोई क्या कर सकता है? क्या दो और दो चार का कोई नवीन वाद उल्लंघन कर सकता है, कदापि नहीं। वह कहते थे कि वर्तमान यूरोप योगविद्या से शून्य होने के कारण सत्य नियमों को निर्भ्रान्त रीति से नहीं जान सकता। इसीलिए यूरोप में एक वाद आज स्थापित किया जाता और दश वर्ष के पीछे उसको खण्डन करना पड़ता है। यदि योग दृष्टि से यूरोप के विद्वान् युक्त होते, तो जो वाद आज निकालते वह कभी परसों खण्डन न होते। उनका कथन था कि विद्या बिना योग के अधूरी रहा करती है। आर्ष ग्रन्थ इसीलिए पूर्ण हैं, कि उनके कर्तृता योगी थे। अष्टाध्यायी इसीलिए उत्तम है कि महर्षि पाणिनि योगी थे। दर्शन शास्त्र के कर्तृता अपने अपने विषय का इसलिए उत्तम वर्णन करते हैं कि वह योगी थे। कई मित्र उनके यह वचन सुन कर कह देते कि योगी तो किसी काम करने के योग्य नहीं रहते। इस शंका के उत्तर में वह कहते कि यह सत्य नहीं है, देखो महर्षि पतंजलि ने योगी होने पर योग शास्त्र और शब्द शास्त्र अर्थात् महाभाष्य लिखा, कृष्ण देव ने योगी होने पर कितना परोपकार किया था? प्राचीन समय में कोई ऋषि मुनि योग से रहित न था और सब ही उत्तम वैदिक कर्म करते थे। वर्तमान समय में क्या स्वामी जी ने योगी होने पर थोड़ा काम किया है? हां यह तो सत्य है कि योग व्यर्थ पुरुषार्थ नहीं करते।

पण्डित जी कहा करते थे कि वर्तमान पश्चिमी आयुर्वेद योग के ही न होने के कारण अधूरा बन रहा है। टूटी हुई अङ्गहीन कला से उसकी क्रियामान उत्तम दशा का पूर्ण अनुमान जैसे नहीं हो सकता, वैसे ही मृत शरीर के केवल चीरने फाड़ने से जीते हुए क्रियामान शरीर का पूर्ण ज्ञान नहीं मिल सकता। एक योगी जीते जागते शरीर की कला को योग दृष्टि से देखता हुआ उसके रोग के कारण को यथार्थ जान सकता और पूर्ण औषधी बतला सकता है परन्तु प्रत्यक्षप्रिय पश्चिमी वैद्यक विद्या यह नहीं कर सकती। जब कोई विद्यार्थी उनसे प्रश्न किया करता कि मैं आत्मोन्नति के लिए क्या करूँ, तो वह उत्तर में कहते कि अष्टाध्यायी से लेकर वेद पर्यन्त पढ़ो और अष्टांग योग के साधन करो। विवाह की बात करते हुए एक समय वह कहने लगे कि हम अपने लड़के को जब वह स्वयं विवाह करना चाहेगा तो यह प्रेरणा कर देंगे कि पाताल देश में जाकर वहां किसी योग्य स्त्री को आर्य बनाओ और उससे विवाह करो।

वह अष्टाध्यायी श्रेणी के सर्व विद्यार्थियों को उपदेश किया करते थे कि प्रातः काल सन्ध्या के पश्चात् एक घण्टा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा करो, वह कहते थे कि मैंने ११ बार सत्यार्थ प्रकाश को विचार पूर्वक पढ़ा है, और जब जब पढ़ा नए से नए अर्थों का भान मेरे मन में हुआ है। वह कहते थे कि शोक की बात है कि लोग सत्यार्थ प्रकाश को कई बेर नहीं पढ़ते। एक अवसर पर प्राणायाम का वर्णन करते हुए वह कहने लगे कि असाध्य रोगों को यही प्राणायाम दूर कर सकता है। उन्होंने बतलाया कि कभी कभी एक हृष्ट पुष्ट मनुष्य को प्राणायाम निर्बल कर देता है, परन्तु थोड़े ही काल के पश्चात् वह मनुष्य बलवान् और पुष्ट हो जाता है। उनका कथन था कि सृष्टि में सबसे उपयोगी वस्तु बिन मोल मिला करती है, इसलिए सबसे उत्तम औषधी असाध्य रोगों के लिए वायु ही है, और यह वायु प्राणायाम की रीति से हमें औषधी का काम दे सकती है।

एक बेर लाला शिवनारायण अपने पुत्र को पण्डित जी के पास ले गये और कहने लगे कि पण्डितजी इसको मैं अष्टाध्यायी पढ़ाता हूं और मेरा विचार है कि इसको अंग्रेजी न पढ़ाऊं आपकी क्या सम्मति है? पण्डित जी बोले हमारी आपके अनुकूल सम्मति है, जब सौ में ६५ पुरुष बिना अंग्रेजी पढ़े के रोटी कमा सकते हैं तो आपको रोटी के लिए भी इसको अंग्रेजी नहीं पढ़ानी चाहिए।

एक बेर मेरे साथ पण्डित जी ने प्रातः काल भ्रमण करने का विचार किया। मैं प्रातः काल ही उनके गृह पर गया और सब से ऊपर के कोठे पर उनको एक टूटी सी खाट पर बिना बिछोने और सिरहाने के सोता पाया। मैंने एक ही आवाज दी तुरन्त उठ कर मेरे साथ हो लिए। मैंने पूछा पण्डित जी आपको ऐसी खाट पर नींद आ गई, कहने लगे कि टूटी खाट क्या निद्रा को रोक सकती है? मैंने कहा कि आपको ऐसी खाट पर सोना शोभा देता है, कहने लगे कि सोना ही है

क्रमशः पृ. ६.....

ईसाई मत की मान्यताएँः तर्क की कसौटी पर।

-आचार्य वेदनिष्ठ

ऊपर से देखने पर ईसाई मत एक सभ्य,सुशिक्षित,शांतिप्रिय समाज लगता हैं। जिसका उद्देश्य ईसा मसीह की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार एवं निर्धनों, दीनों की सेवा-सहायता करना हैं। इस मान्यता का कारण ईसाई समाज द्वारा बनाई गई छवि है। यह कटु सत्य है कि ईसाई मिशनरी विश्व के जिस किसी देश में गए। उस देश के निवासियों के मूल धर्म में सदा खामियों को प्रचारित करना एवं अपने मत को बड़ा चढ़ाकर पेश करना ईसाईयों की सुनियोजित नीति रही हैं। इस नीति के बल पर वे अपने आपको श्रेष्ठ एवं सभ्य तथा दूसरों को निकृष्ट एवं असभ्य सिद्ध करते रहे हैं। इस लेख के माध्यम से हम ईसाई मत की तीन सबसे प्रसिद्द मान्यताओं की समीक्षा करेंगे जिससे पाठकों के भ्रम का निवारण हो जाये।

१. प्रार्थना से चंगाई
२. पापों का क्षमा होना
३. गैर ईसाईयों को ईसाई मत में धर्मान्तरित करना

१. प्रार्थना से चंगाई,

ईसाई समाज में ईसा मसीह अथवा चर्च द्वारा घोषित किसी भी संत की प्रार्थना करने से बिमारियों का ठीक होने की मान्यता पर अत्यधिक बल दिया जाता हैं। आप किसी भी ईसाई पत्रिका, किसी भी गिरिजाघर की दीवारों आदि में जाकर ऐसे विवरण (Testimonials) देख सकते हैं। आपको दिखाया जायेगा की एक गरीब आदमी था। जो वर्षों से किसी लाईलाज बीमारी से पीड़ित था। बहुत उपचार करवाया मगर बीमारी ठीक नहीं हुई। अंत में प्रभु ईशु अथवा मरियम अथवा किसी ईसाई संत की प्रार्थना से चमत्कार हुआ। और उसकी यह बीमारी सदा सदा के लिए ठीक हो गई। सबसे अधिक निर्धनों और गैर ईसाईयों को प्रार्थना से चंगा होता दिखाया जाता हैं। यह चमत्कार की दुकान सदा चलती रहे इसलिए समय समय पर अनेक ईसाईयों को मृत्यु उपरांत संत घोषित किया जाता हैं। हाल ही में भारत से मदर टेरेसा और सिस्टर अलफोंसो को संत घोषित किया गया हैं और विदेश में दिवंगत पोप जान पाल को संत घोषित किया गया है। यह संत बनाने की प्रक्रिया भी सुनियोजीत होती हैं। पहले किसी गरीब व्यक्ति का चयन किया जाता हैं जिसके पास इलाज करवाने के लिए पैसे नहीं होते।

प्रार्थना से चंगाई में विश्वास रखने वाली मदर टेरेसा खुद विदेश जाकर तीन बार आँखों एवं दिल की शल्य चिकित्सा करवा चुकी थी (ii) संभवत हिन्दुओं को प्रार्थना का सन्देश देने वाली मदर टेरेसा को क्या उनको प्रभु ईसा मसीह अथवा अन्य ईसाई संतो की प्रार्थना द्वारा चंगा होने का विश्वास नहीं था जो वे शल्य चिकित्सा करवाने विदेश जाती थी?

सिस्टर अलफोंसो केरल की रहने वाली थी। अपनीअपने जीवन के तीन दशकों में से करीब २० वर्ष तक अनेक रोगों से ग्रस्त रही थी (iii), केरल एवं दक्षिण भारत में निर्धन हिन्दुओं को ईसाई बनाने की प्रक्रिया को गति देने के लिए संभवत उन्हें भी संत का दर्जा दे दिया गया और यह प्रचारित कर दिया गया की उनकी प्रार्थना से भी चंगाई हो जाती हैं।

दिवंगत पोप जान पाल स्वयं पार्किन्सन रोग से पीड़ित थे और चलने फिरने से भी असमर्थ थे। यहाँ तक की उन्होंने अपना पद अपनी बीमारी के चलते छोड़ा था (iv),। कोस्टा रिका की एक महिला के मस्तिष्क की व्याधि जिसका ईलाज करने से चिकित्सकों ने मना कर दिया था। वह पोप ज,न प,ल के चमत्कार से ठीक हो गई। इस चमत्कार के चलते उन्हें भी चर्च द्वारा संत का दर्ज दिया गया हैं।

पाठक देखेगे की तीनों के मध्य एक समानता थी। जीवन भर ये तीनों अनेक बिमारियों से पीड़ित रहे थे। मरने के बाद अन्यों की बीमारियां ठीक करने का चमत्कार करने लगे। अपने मंच से कैंसर, एड्स जैसे रोगों को ठीक करने का दावा करने वाले बैनी हिन्न (Benny Hinn) नामक प्रसिद्ध ईसाई प्रचारक हाल ही में अपने दिल की बीमारी के चलते ईलाज के लिए अस्पताल में भर्ती हुए थे (v),। वह atrial fibrillation नामक दिल के रोग से पिछले २० वर्षों से पीड़ित है। तर्क और विज्ञान की कसौटी पर प्रार्थना से चंगाई का कोई अस्तित्व नहीं हैं। अपने आपको आधुनिक एवं सभ्य दिखाने वाला ईसाई समाज प्रार्थना से चंगाई जैसी रूढ़िवादी एवं अवैज्ञानिक सोच में विश्वास रखता हैं। यह केवल मात्र अंधविश्वास नहीं अपितु एक षड़यंत्र है। गरीब गैर ईसाईयों को प्रभावित कर उनका धर्म परिवर्तन करने की सुनियोजित साजिश हैं।

२. पापों का क्षमा होना-

ईसाई मत की दूसरी सबसे प्रसिद्ध मान्यता है पापों का क्षमा होना। इस मान्यता के अनुसार कोई भी व्यक्ति कितना भी बड़ा पापी हो। उसने जीवन में कितने भी पाप किये हो। अगर वो प्रभु ईशु मसीह की शरण में आता है तो ईशु उसके सम्पूर्ण पापों को क्षमा कर देते है। यह मान्यता व्यवहारिकता,तर्क और सत्यता की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। व्यवहारिक रूप से आप देखेगे कि संसार में सभी ईसाई देशों में किसी भी अपराध के लिए दंड व्यवस्था का प्रावधान हैं। क्यों? कोई ईसाई मत में विश्वास रखने वाला अपराधी अपराध करे तो उसे चर्च ले जाकर उसके पाप स्वीकार (confess) करवा दिए जाये। स्वीकार करने पर उसे छोड़ दिया जाये। इसका क्या परिणाम निकलेगा? अगले दिन वही अपराधी और बड़ा अपराध करेगा क्यूंकि उसे मालूम है कि उसके सभी पाप क्षमा हो जायेगे। अगर समाज में पापों को इस प्रकार से क्षमा करने लग जाये तो उसका अंतिम परिणाम क्या होगा? जरा विचार करे।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश (vi) में ईश्वर द्वारा अपने भक्तों के पाप क्षमा होने पर ज्ञानवर्धक एवं तर्कपूर्ण उत्तर दिया हैं। स्वामी जी लिखते है। - ‘‘नहीं, ईश्वर किसी के पाप क्षमा नहीं करता। क्योंकि जो ईश्वर पाप क्षमा करे तो उस का न्याय नष्ट हो जाये और सब मनुष्य महापापी हो जायें। इसलिए कि क्षमा की बात सुन कर ही पाप करने वालों को पाप करने में निभर्यता और उत्साह हो जाये। जैसे राजा यदि अपराधियों के अपराध को क्षमा कर दे तो वे उत्साहपूर्वक अधिक अधिक बड़े-बड़े पाप करें। क्योंकि राजा अपना अपराध क्षमा कर देगा और उन को भी भरोसा हो जायेगा कि राजा से हम हाथ जोड़ने आदि चेष्टा कर अपने अपराध छुड़ा लेंगे और जो अपराध नहीं करते, वे भी अपराध करने में न डर कर पाप करने में प्रवृत्त हो जायेंगे। इसलिए सब कर्मों का फल यथावत् देना ही ईश्वर का काम है, क्षमा करना नहीं‘‘।

वैदिक विचारधारा में ईश्वर को न्यायकारी एवं दयालु बताया गया हैं। परमेश्वर न्यायकारी है,क्यूंकि ईश्वर जीव के कर्मों के अनुपात से ही उनका फल देता है कम या ज्यादा नहीं। परमेश्वर दयालु है, क्यूंकि कर्मों का फल देने की व्यवस्था इस प्रकार की है जिससे जीव का हित हो सके। शुभ कर्मों का अच्छा फल देने में भी जीव का कल्याण है और अशुभ कर्मों का दंड देने में भी जीव का ही कल्याण है। दया का अर्थ है जीव का हित चिंतन और न्याय का अर्थ है, उस हितचिंतन की ऐसी व्यवस्था करना कि उसमें तनिक भी न्यूनता या अधिकता न हो।

ईसाई मत में प्रचलित पापों को क्षमा करना ईश्वर के न्यायप्रियता और दयालुता गुण के विपरीत हैं। अव्यवहारिक एवं असंगत होने के कारण अन्धविश्वास मात्र हैं।

३. गैर ईसाईयों को ईसाई मत में धर्मान्तरित करना

ईसाई मत को मानने वालो में गैर ईसाईयों को ईसाई मत में धर्मान्तरित कर शामिल करने की सदा चेष्टा बनी रहती हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता हैं कि जैसे वही ईसाई सच्चा ईसाई तभी माना जायेगा जो गैर ईसाईयों को ईसाई नहीं बना लेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि ईसाईयों में आचरण और पवित्र व्यवहार से अधिक धर्मान्तरण महत्वपूर्ण हो चला हैं। धर्मांतरण के लिए ईसाई समाज हिंसा करने से भी भी पीछे नहीं हटता। अपनी बात को मैं उदहारण देकर सिद्ध करना चाहता हूँ। ईसाई प्रभुत्व वाले पूर्वोत्तर के राज्य मिजोरम से वैष्णव हिन्दू रीति को मानने वाली रियांग जनजाति को धर्मान्तरण कर ईसाई न बनने पर चर्च द्वारा समर्थित असामाजिक लोगों ने हिंसा द्वारा राज्य से निकाल दिया (vii),। हिंसा के चलते रियांग लोग दूसरे राज्यों में शरणार्थी के रूप में रहने को बाधित हैं। सरकार द्वारा बनाई गई नियोगी कमेटी के ईसाईयों द्वारा धर्मांतरण के लिए अपनाये गए प्रावधानों को पढ़कर धर्मान्तरण के इस कुचक्र का पता चलता हैं (viii),। चर्च समर्थित धर्मान्तरण एक ऐसा कार्य हैं जिससे देश की अखंडता और एकता को बाधा पहुँचती हैं।

इसीलिए हमारे देश के संभवत शायद ही कोई चिंतक ऐसे हुए हो जिन्होंने प्रलोभन द्वारा धर्मान्तरण करने की निंदा न की हो। महान चिंतक एवं समाज सुधारक स्वामी दयानंद का एक ईसाई पादरी से शास्त्रार्थ हो रहा था। स्वामी जी ने पादरी से कहा की हिन्दुओं का धर्मांतरण करने के तीन तरीके है। पहला जैसा मुसलमानों के राज में गर्दन पर तलवार रखकर जोर जबरदस्ती से बनाया जाता था। दूसरा बाढ़, भूकम्प, प्लेग आदि प्राकृतिक आपदा जिसमें हजारों लोग निराश्रित होकर ईसाईयों द्वारा संचालित अनाथाश्रम एवं विधवाश्रम आदि में लोभ-प्रलोभन के चलते भर्ती हो जाते थे और इस कारण से आप लोग प्राकृतिक आपदाओं के देश पर बार बार आने की अपने ईश्वर से प्रार्थना करते है और तीसरा बाइबिल की शिक्षाओं के जोर शोर से प्रचार-प्रसार करके। मेरे विचार से इन तीनों में सबसे उचित अंतिम तरीका मानता हूँ। स्वामी दयानंद की स्पष्टवादिता सुनकर पादरी के मुख से कोई शब्द न निकला। स्वामी जी ने कुछ ही पंक्तियों में धर्मान्तरण के पीछे की विकृत मानसिकता को उजागर कर दिया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ईसाई धर्मान्तरण के सबसे बड़े आलोचको में से एक थे। अपनी आत्मकथा में महात्मा गांधी लिखते है ‘‘उन दिनों ईसाई मिशनरी हाई स्कूल के पास नुक्कड़ पर खड़े हो हिन्दुओं तथा देवी देवताओं पर गलियां उड़ेलते हुए अपने मत का प्रचार करते थे। यह भी सुना है की एक नया कन्वर्ट (मतांतरित) अपने पूर्वजों के धर्म को, उनके रहन-सहन को तथा उनके गलियां देने लगता है। इन सबसे मुझमें ईसाइयत के प्रति नापसंदगी पैदा हो गई।‘‘ इतना ही नहीं गांधी जी से मई, १९३५ में एक ईसाई मिशनरी नर्स ने पूछा कि क्या आप मिशनरियों के भारत आगमन पर रोक लगाना चाहते है तो जवाब में गांधी जी ने कहा था,‘ अगर सत्ता मेरे हाथ में हो और मैं कानून बना सकूं तो मैं मतांतरण का यह सारा धंधा ही बंद करा दूँ। मिशनरियों के प्रवेश से उन हिन्दू परिवारों में जहाँ मिशनरी पैठे है, वेशभूषा, रीतिरिवाज एवं खानपान तक में अंतर आ गया है।

समाज सुधारक एवं देशभक्त लाला लाजपत राय द्वारा प्राकृतिक आपदाओं में अनाथ बच्चों एवं विधवा स्त्रियों को मिशनरी द्वारा धर्मान्तरित करने का पुरजोर विरोध किया गया जिसके कारण यह मामला अदालत तक पहुंच गया। ईसाई मिशनरी द्वारा किये गए कोर्ट केस में लाला जी की विजय हुई एवं एक आयोग के माध्यम से लाला जी ने यह प्रस्ताव पास करवाया की जब तक कोई

क्रमशः पृ. ७.....

पुनर्जन्म पर आक्षेपों का उत्तर

-प्रा०राम प्रसाद, एम.ए.

अब हम उन आक्षेपों का उत्तर देंगे जो विधर्मियों द्वारा किये जाते हैं। पुनर्जन्म पर आक्षेप किया जाता है कि इसके विषय में कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है। इस आक्षेप का उत्तर यह है कि संसार में कर्म और उसका फल सुख-दुःख प्रत्यक्ष ही हैं। पुनर्जन्म भी कर्मफल का ही एक रुप है। अतः इसे प्रत्यक्ष ही मानना चाहिए।

आक्षेप— स्मृति के अनुसार भी पुनर्जन्म की कोई साक्षी नहीं है। कर्मों की स्मृति ही नहीं तो कैसे माना जाए कि इस जन्म के सुख-दुःख पूर्वजन्म के कर्मों के फल हैं?

उत्तर— पूर्वजन्म की स्मृति की बात तो दूर रही, इस जन्म की घटनाओं की स्मृति मनुष्य को नहीं रहती। नौ मास तक गर्भ में रहने का हाल किसी को ज्ञात नहीं। पांच वर्ष की आयु का वृत्तान्त किसी को भी स्मरण नहीं रहता। सुषुप्ति में जागृत अवस्था का व्यवहार स्मरण नहीं रहता। यदि इस जन्म की यह अवस्था है तो पूर्वजन्म की स्मृति यदि मनुष्य को नहीं रहती तो इसमें क्या आश्चर्य है ! यदि पिछले सब दुःखों, कष्टों और क्लेशों की स्मृति मनुष्यों को बनी रहे तो उसका जीवन बिताना ही दुष्कर हो जाए। यदि पिछली सब घटनाओं की स्मृति बनी रहे तो उपयोगी बातें मस्तिष्क में नहीं समा पाएँगी। स्मृति के लिए विस्मरण भी आवश्यक होता है। पूर्वेत सब कर्मों की स्मृति की आवश्यकता भी नहीं है, क्योंकि कर्मों के संस्कार आत्मा पर अंकित होते रहते हैं जो भावी जीवन के निर्माण में सहायक होते हैं।

आक्षेप— पशुओं की योनि में मनुष्यों के जीवात्माओं का जाना पशुओं पर किए गए अत्याचारों के बदले में माना जाता है, यह अनुचित है। प्रत्येक पशु अपनी ही योनि में प्रसन्न है। दण्ड के रुप में पशु-योनि में जाने की बात मानना ठीक नहीं है।

उत्तर— पशुओं और पक्षियों का अपनी योनियों में प्रसन्न रहना ईश्वर की कृपा और महिमा का परिणाम है। जैसे दास-दासियाँ, बेगार में काम लिये जाने वाले व्यक्ति और पागल, अपनी अवस्था में प्रसन्न रहते हैं, वैसी ही स्थिति पशु-पक्षियों की होती है। पाप-कर्मों का फल भोगने पर जब उन्हें मनुष्य योनि प्राप्त होती है तो वे मनुष्य-जीवन का आनन्द प्राप्त करते हैं और पिछले दुःखों को भूल जाते हैं।

आक्षेप— जन्म से सुखी-दुःखी, रोगी-निरोग और निर्धन-धनवान् होने का कारण पूर्वजन्म के कर्मों को मानना ऐसे ही है जैसे अँधेरी रात में किसी व्यक्ति को जाता हुआ देखें तो कह दें कि यह चोर ही है।

उत्तर— कार्य को देखकर कारण का अनुमान होता है। जेलखाने के कैदियों को देखकर अपराध का ज्ञान होता है और अपराध को देखकर कैद का पता चलता है। इसी प्रकार इस जन्म के सुख-दुःख को देखकर पूर्वजन्म के कर्मों का अनुमान होता है। यदि ऐसा नहीं माना जायेगा तो भेद-भाव और पक्षपात का लांछन परमात्मा पर आयेगा।

आक्षेप— वर्तमान जन्म के सुख और दुःख पूर्वजन्म के कर्मों का परिणाम नहीं हैं, अपितु ये तो ईश्वर की महिमा का परिचय देते हैं

उत्तर— वर्तमान काल के सुख-दुःख ईश्वर की महिमा को प्रकट नहीं करते अपितु उसके अन्याय को प्रकट करते हैं। जब पूर्वजन्म के कर्मों के आधार के बिना ही ईश्वर किसी को निर्धन और किसी को धनवान्, किसी को मूर्ख और किसी को विद्वान्, किसी को राजा और किसी को रंक बना देता है तो क्या यह उसका अन्याय नहीं है?

आक्षेप— जन्म से लूले, लँगड़े, अंधे, बहरे, रोगी परिस्थितियों के परिणाम हैं। इसका पूर्वजन्म से कोई सम्बन्ध नहीं।

उत्तर— परिस्थितियाँ भी कर्मों के अनुसार बनती हैं। ये जन्मजात रोग पूर्व-कर्मों के परिणाम हैं।

आक्षेप— यदि ईश्वर दया न करे तो दुष्ट लोगों की प्रार्थना-याचना व्यर्थ सिद्ध होगी।

आक्षेप— यदि ईश्वर बुरे कर्मों को क्षमा करे तो संसार में पाप की वृद्धि होगी और वह अन्यायकारी कहलायेगा।

आक्षेप— तुम्हारे पूर्वज बुरे थे। यदि बुरे न होते तो आवागमन में न पड़ते।

उत्तर— किसी भी जाति के सभी पूर्वज न अच्छे होते हैं न बुरे। जो शुभ-कर्म करते हैं, उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। जिनके पुण्य अधिक होते हैं, वे देव अथवा विद्वानों के शरीर को प्राप्त होते हैं। जब पाप और पुण्य बराबर होते हैं तो मनुष्य का शरीर मिलता है। जब पाप अधिक होते हैं तो जीव पशु, पक्षी, कीट और पतंग योनि में जाता है। ये नियम सभी प्राणियों पर लागू होते हैं।

आक्षेप— कर्मफल-सिद्धान्त के अनुसार जो भी रोग हैं वे पिछले कर्मों के फल हैं। पिछले जन्म के कर्मों का फल रोगों के रुप में भोगना ही है तो चिकित्सा शास्त्र बेकार है।

उत्तर— जन्मजात रोग पूर्वजन्म के कर्मफल होते हैं। वर्तमान जीवन के कई रोग वर्तमान काल के कुपथ्य और लापरवाही के कारण होते हैं। वर्तमान काल के कई रोग, जिनके कारण हमारे सामने प्रत्यक्ष नहीं होते, वे भी पूर्वजन्म के कर्मों के कारण होते हैं। रोग चाहे पूर्वजन्म के कारण हो अथवा वर्तमान काल के कुपथ्य और लापरवाही के कारण, उनका उपचार भी आवश्यक है। परमात्मा ने ओषधियों में रोग-निवारण के गुण भर रखे हैं। यदि इन ओषधियों का सेवन न किया जाए तो फिर उनका बनाया जाना ही व्यर्थ है। परमात्मा की कोई रचना व्यर्थ नहीं होती।

आक्षेप— जब सुख-दुःख कर्मों के फल हैं तो परोपकार करने की कुछ भी आवश्यकता नहीं।

उत्तर— सुख-दुःख तो अपने कर्मों का फल है ही, परन्तु ह्रदय की पवित्रता, ईश्वर की कृपा का पात्र बनने और नए शुभ कर्म करने के लिए परोपकार भी आवश्यक है, अतः इन दोनों का आपस में कोई विरोध नहीं है।

आक्षेप— छोटे-मोटे बच्चों को हम रोगग्रस्त देखते हैं। ये रोग किन कर्मों के परिणाम हैं?

उत्तर— बच्चों के कष्ट इस जन्म के कर्मों का फल नहीं हैं। ये तो कर्म-बीज के फल हैं बीज अर्थात् पूर्व-कर्म यहाँ प्रकट नहीं हैं। बच्चों का जन्मजात अन्धापन, बहरापन, गूँगापन, लँगड़ापन, लूलापन, जन्मजात सुख-दुःख और रोग पूर्वजन्मों के कर्मों के फल हैं। इनका और कोई उत्तर हो ही नहीं सकता।

आक्षेप— यह कैसे पता चले कि मनुष्य के शरीर में किसी दूसरे शरीर की आत्मा आई है?

उत्तर— किसी भी प्राणधारी की सूक्ष्मवृत्तियों का अध्ययन करने से यह ज्ञान हो सकता है कि आत्मा का सम्बन्ध पहले किस प्रकार के शरीर से था।

आक्षेप— परमात्मा ने पशुओं को एक विशेष प्रकार का स्वभाव प्रदान कर रखा है। वे उसी स्वभाव के अनुसार काम करते हैं। न वे अच्छे कर्म करते हैं और न बुरे। अतः उनके आत्मा मनुष्य-योनि में नहीं आ सकते।

उत्तर— पशुयोनि भोगयोनि होती है। जो मनुष्य अतिनिकृष्ट कर्म करते हैं वे ईश्वर की व्यवस्था के अन्तर्गत पशुयोनि को प्राप्त होते हैं। जब वे कर्मफल भोग लेते हैं तो मनुष्ययोनि को प्राप्त होते हैं, जैसे बन्दी बन्दीगृह की यातना को भोगकर बन्दीगृह से मुक्त कर दिए जाते हैं।

आक्षेप— मनुष्य की आत्माएँ पशुयोनि में जाकर उनके स्वभावानुसार कर्म कर ही नहीं सकतीं।

उत्तर— मनुष्यों की जो आत्माएँ पशुओं की योनि को धारण करती हैं, उन्हें पशुओं के स्वभावानुसार ही कर्म करने पड़ते हैं।

आक्षेप— जब पशु पाप-पुण्य करने में असमर्थ हैं तो उन्हें सुख-दुःख और रोगों की प्राप्ति क्यों होती है?

उत्तर— पशुओं की योनि भोगयोनि होती है। इसमें वे केवल फल ही भोगते हैं। जिन रोगों और दुःखों के कारण ज्ञात हैं वे वर्तमान परिस्थितियों के कारण हैं। जिन रोगों व दुःखों के कारण अज्ञात हैं वे पूर्वजन्मों के कर्मों के कारण हैं।

आक्षेप— जीव शुभकर्म करते हैं और परमात्मा शुभ फल देता है तो वह एक स्वार्थी दुकानदार ठहरता है।

उत्तर— शुभ कर्मों का फल देने के नाते वह एक स्वार्थी दुकानदार नहीं ठहरता, अपितु न्यायकारी ठहरता है।

आक्षेप— यह कितनी लज्जास्पद बात है कि पुनर्जन्म के अनुसार हमारे माता-पिता, बुजुर्ग, बन्धु-बान्धव, और मित्र गधे, घोड़े, कुत्ते, सूअर और साँप बने, हम उनकी सवारी करें अथवा उनका सिर कुचलें।

उत्तर— जब तक आत्मा और शरीर का संयोग रहता है तब तक ये सम्बन्ध रहते हैं। जब आत्मा और शरीर का मृत्यु के समय वियोग हो जाता है, तब ये सम्बन्ध नहीं रहते।

आक्षेप— मनुष्य तो पाप करें और उनका फल पशु, पक्षी, कीट और पतंग भोगें, क्या यह अन्याय नहीं है?

आक्षेप— पाप और पुण्य का कर्ता एवं भोक्ता आत्मा होता है, शरीर नहीं। जो आत्मा पापकर्म करता है वही दूसरे शरीर में उनका फल भोगता है। शरीर न कर्म करता है और न फल भोगता है।

आक्षेप— अपराधी को उसके अपराध का ज्ञान कराये बिना दण्ड देना क्या घोर अन्याय नहीं है?

उत्तर— आत्माओं को अपने सब अच्छे कर्मों और सब बुरे कर्मों का ज्ञान हो ही नहीं सकता। यह अल्पज्ञ जीवात्मा का विषय नहीं, अपितु सर्वज्ञ परमात्मा का विषय है। अतः जीवात्मा को अपराधों का बोध नहीं हो सकता। वर्तमान काल के दुःख और निर्धनता को देखकर पूर्वजन्म और पूर्वेत पाप और अपराध का बोध करना चाहिए। अपराधी को यदि अपराध का बोध कराए बिना ही दण्ड दिया जाए तो वह अपराध के बोध से होने वाली मानसिक पीड़ा से बच जाएगा।

आक्षेप— आवागमन की मान्यता मनुष्य को पतन की ओर ले-जाने वाली है। कल्पना करो कि पूर्वजन्म में जो किसी की माता थी, वह इस जन्म में घोड़ी हो और वह उस पर सवारी करे तो क्या वह अपनी माता पर सवारी करता है?

आक्षेप— आत्मा का लिंग नहीं हुआ करता। लिंग शरीर का होता है, अतः यह प्रश्न अनर्गल है।

(वैदिक धर्म का स्वरुप'' पुस्तक से)

पृष्ठ ३ का शेष.....

कहीं सो रहे, बहुधा कंगाल लोग भी जब ऐसी खाटों पर सोते हैं तो हम क्या निराले हैं? इस प्रकार बात चीत करते हुए मैं और लाला जगन्नाथ जी पण्डित जी के साथ नगर से दूर निकल गये। रास्ते में उन्होंने छोटे-छोटे ग्रामों में रहने के लाभ दर्शाये, फिर घोड़ों की कथाऐं वर्णन करते हुए हमें निश्चय करा दिया कि पशुओं में भी हमारे जैसा आत्मा है और यह भी सुख दुःख को अनुभव करते हैं। गोल बाग में आकर उन्होंने हमें बतलाया कि वनस्पति में भी आत्मा मूर्छित अवस्था में है और एक फूल को तोड़कर बहुत कुछ विद्या विषयक बातें वनस्पतियों की सुनाते रहे। इतने में लाला गणपतराय जी भी आ मिले और हम सब एकत्र होकर पण्डित जी की उत्तम शिक्षाएं ग्रहण करने लगे। उन्होंने गन्दे विषयासक्ति के दर्शाने वाले कल्पित ग्रन्थों के पढ़ने का खण्डन किया और पश्चिमी देशों के बड़े बड़े इन्द्रियाराम धनी पुरुषों के पापमय जीवनों का वर्णन करते हुए कहा कि निर्वाह मात्र के लिए धर्म से धन प्राप्त करना साहूकारी है न कि पाप से रुपया कमा कर विषय भोग करना अमीरी है। अन्त में उन्होंने कहा कि पूर्ण उन्नत मनुष्य का दृष्टान्त ऋषि जीवन है। फिर उन्होंने कहा कि वह प्राचीन ऋषि, नहीं जान पड़ता कि कैसे अद्भुत विद्वान् होंगे जो अपने हाथों से, अनुभव करते हुए यह लिख गए कि संसार में ईश्वर इस प्रकार प्रतीत हो रहा है जैसा कि खारे जल में लवण विद्यमान् है।

एक समय लाहौर में ईसाइयों के स्थान में एक अंग्रेज ने व्याख्यान दिया जिसमें उसने मैक्समूलर आदि के प्रमाणों से वैदिक धर्म को दूषित बतलाया। पण्डित जी भी वहां गए हुए थे। आते हुए रास्ते में कहने लगे कि हम इसके कथन से सम्मत नहीं हैं। क्या यह हो सकता है कि हम भारतवर्ष के निवासी लण्डन में जाकर अंग्रेजी के प्रोफैसरों के सन्मुख ''शेक्सपीअर'' और ''मैकाले'' की अशुद्धियां निकालें और अंग्रेजी शब्दों के अपने अर्थ अंग्रेजों को सुनाकर कहें, कि तुम ''शेक्सपीअर'' नहीं जानते हमसे अर्थ सीखो। क्या ''मैक्समूलर'' वेदों के अर्थ अधिक जान सकता है अथवा प्राचीन ऋषि मुनि? निरुक्त आदि में वेद के अर्थ मिल सकते हैं न किसी विदेशी की कल्पना वेद के अर्थ को जान सकती है।

जब कोई उनसे स्वामी दयानन्द जी के जीवन चरित्र के विषय में प्रश्न करता तो वह सब काम छोड़कर उसके प्रश्न को सुनते और उत्तर देने को प्रस्तुत हो जाते। एक बेर किसी भद्रपुरुष ने उनको कहा कि पण्डित जी आप तो स्वामी जी के योगी होने के विषय में इतनी बातें विदित हैं, आप क्यों नहीं उनका जीवन चरित्र लिखते? उत्तर में बड़ी गम्भीरता से कहने लगे, कि हां, यत्न तो कर रहा हूं कि स्वामी जी का जीवन चरित्र लिखा जावे, कुछ कुछ आरम्भ तो कर दिया है। उसने कहा कि कब छपेगा, बोले कि आप पत्र पर जीवन चरित्र समझ रहे हो, हमारे विचार में स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र जीवन में लिखना चाहिए। मैं यत्न तो कर रहा हूं कि अपने जीवन में उनके जीवन को लिख सकूं।

एक बेर अमृतसर समाज के उत्सव पर व्याख्यान देते हुए, उन्होंने दर्शाया कि स्वामी जी के महत्व का लोगों को २०० वर्ष के पीछे बोधन होगा जब कि विद्वान् पक्षपातृ से रहित हो कर उनके ग्रन्थों को विचारेंगे। अभी लोगों की यह दशा नहीं कि योगी की बातों को जान सकें। वह कहा करते थे कि जैसे पांच सहस्र वर्ष व्यतीत हुए कि एक महाभारत युद्ध पृथिवी पर हुआ था, जिसके कारण वेदादि शास्त्रों का पठन पाठन पृथिवी पर से नष्ट होता गया, वैसे ही अब एक और विद्यारूपी महाभारत युद्ध की पृथिवी पर सामग्री एकत्र हो रही है, जब कि पूर्व और पश्चिम के मध्य में विद्या युद्ध होगा और जिसके कारण फिर वेदों का पठन पाठन संसार में फैलेगा और इस आत्मिक युद्ध का बीज स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज रूपी साधन द्वारा भूगोल में डाल दिया है।

एक अवसर पर किसी पुरूष के उत्तर में उन्होंने बतलाया कि स्वामी जी ने अजमेर में कहा था कि महाराजा युद्धिष्ठिर के राज से पहले चूहड़े अर्थात् भंगी आर्याव्रत में नहीं होते थे। आर्ष ग्रन्थों में भंगियों के लिए कोई शब्द नहीं है।

एक बेर, लाहौर में जब कि लोग अष्टाध्यायी पढ़ने के विपरीत युक्तियां घड़ रहे थे, तो उन्होंने समाज में एक व्याख्यान इस विषय पर दिया कि ''लोग क्या कहेंगे'' जिसमें उन्होंने सिद्ध किया कि जब कोई नया शुभ काम आरम्भ किया जाता है तब ही करने वालों के मन में उक्त प्रकार प्रश्न उठा करते हैं, परन्तु दृढ़ता के आगे ऐसे ऐसे प्रश्न स्वयं ही शान्त हो जाया करते हैं।

आरोग्यता सम्बन्धी बहुत सी बातें वह हमको बतलाया करते थे। उनका कथन था कि प्रातः काल भ्रमण करने के पीछे पांच वा सात मिनट आते ही लेट जाना चाहिए, इससे मल उतर आता है यदि रास्ते में भ्रमण करते समय एक संतरा खा लिया जाए तो और भी हितकारी है। वह मद्य, मांस, तमाकू, भंग आदि का खाना पीना सबको वर्जन करते थे रोटी के संग जल पान करने को अहित दर्शाते थे। वह स्वयं, जल रोटी खाने के कुछ काल पीछे पान करते थे। एक बेर स्वामी स्वात्मानन्द जी ने उनसे प्रश्न किया, कि वीर क्षत्रियों को मांस खाने की आवश्यकता है वा नहीं? इसके उत्तर में उन्होंने यूनान देश के योद्धाओं, नामधारी सिक्खों और ग्राम निवासी वीरों के दृष्टान्तों से सिद्ध कर दिया कि क्षत्री को मांस खाने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है, उन्होंने अर्जुन के दृष्टान्त से विदित किया कि वीरता का एक कारण आत्मिक संकल्प आदि है। क्योंकि जिस समय अर्जुन ने विचार किया था कि मुझको नहीं लड़ना चाहिए वह कायर हो गया, परन्तु जब कृष्णदेव के उपदेश ने उसके मनोभाव पलट दिए तो वही अर्जुन फिर वीर हो कर लड़ने लगा। अन्त में उन्होंने कहा कि अखण्ड ब्रह्मचर्य वीरता के लिए अत्यन्त आवश्यक है। स्वात्मानन्द जी मान गये कि बिना मांस भक्षण किये क्षत्री वीर हो सकते हैं।

एक बेर उन्होंने लाला केदारनाथजी को उपदेश किया कि जल की नवसार चढ़ाया करो और ''ऐनक'' लगाना आंखों पर से छोड़ दो। उन्होंने मुझे तथा अन्य भाईयों को बिच्छु काटने, स्मृति के बढ़ाने और शीतला के रोकने की औषधियें बतलाईं थीं।

अक्टूबर १८८९ ई० में उन्होंने एक पत्र मुझे अमृतसर भेजा था। इस पत्र का विषय सर्वहितकारी है, इसलिए नीचे उस का अनुलेख लिखा जाता है। इसके पाठ से उनके आशामय जीवन का बोधन होता है।

Namaste & I am here not knowing how I am however more hopeful than ever of a better future- I hope the pain will soon leave you- There is nothing to despair so long as there is even one breath of life in the body- For even one moment of pious thoughts in my opinion recompensates hundreds of indolence and vicious deeds- Why should we despair while "the world is as we make it-" Let us then resolve just now and make it better-
Yours ever affly]
(क) Guru Datta Vidyarthi
(LAHORE: 15th October, 1889)

(अर्थ) ''नमस्ते! मैं इस जगह हूँ नहीं जानता कि कैसे हूँ तथापि भावी दशा के उत्तम होने की पूर्ण आशा है। मुझे आशा है कि आप पीड़ा से शीघ्र रहित हो जाएंगे। जब तक एक श्वास भी शरीर में है, तब तक निराश होने की कोई बात नहीं। क्योंकि मेरी सम्मति में एक क्षण जिसमें शुद्ध भाव धारण किये जाएं, सैकड़ों प्रमाद और पापमय कर्मों को नाश करने के सामर्थ्य हैं। हम निराश क्यों हों, भोग रूपी संसार को जैसा चाहें हम ही बनाते हैं। आओ, हम अभी संसार को उत्तम बनाने की प्रतिज्ञा धारण करें।''

एक बेर जब कि वह रोग से ग्रसित थे, तब श्रीयुत मलिक ज्वालासहायजी ने उनसे पूछा कि पण्डित जी आपको कष्ट तो नहीं होता, उत्तर में कहने लगे कि मलिक जी जब हमने निश्चय कर लिया कि आत्मा अमर है, तो फिर हमें कोई भय और कष्ट नहीं हो सकता, कष्ट तो उनके लिए है, जो आत्मा को अमर नहीं मानते।

हम विस्तार पूर्वक पण्डित जी का जीवन चरित्र नहीं लिख रहे, केवल मोटे मोटे दृष्टान्तों से सिद्ध कर रहे हैं, कि उनका जीवन किस प्रकार का अद्भुत और विचित्र था। साधारण सी बात चीत में वह गूढ़ से गूढ़ विद्या और कठिन से कठिन धार्मिक साधनों की महिमा प्रकाश किया करते थे। उनका जीवन प्रेम से भरपूर होने के कारण लोगों के हृदयों को आकर्षण करता था। उनकी बुद्धि तथा स्मरणशक्ति का विचार करते हुए हम उनको ''फैजी'' अथवा ''बैलनटायन'' पाते हैं। उनके न थकने वाले पुरुषार्थ में हमें यूनान के ''डीमोस्थनीज'' के पुरुषार्थ का अनुभव होता है। उनके मृत्युभय से रहित होने में हमें ''सुकरात'' का इस समय में दृष्टान्त मिलता है। उनका निराभिमान विद्यार्थी शब्द से जो वह अपने नाम के पीछे लिखते थे प्रकट हो रहा है। वह अपने दंभ रहित जीवन तथा परोपकार के कारण उन पुरुषों से जो कि आर्य्य सभासद भी नहीं, अत्यन्त मान पा रहे हैं। उनके सारगर्भित व्याख्यान और रत्नवत ललित अत्युत्तम लेखों पर बुद्धिमान् विदेशी भी लट्टू हो रहे हैं।

ऐसी अद्भत और विचित्र उत्तम शक्तियों के रखने वाले गुरुदत्त को किस शक्ति ने आर्य समाज की ओर खैंचा? पश्चिमी विद्या के भयानक नास्तिकपन से निकाल किसने उनको ईश्वर उपासक बनाया? किसने उनको पश्चिमी विद्या की अपेक्षा संस्कृत साहित्य की अनुपम उत्तमता दर्शा दी? ऐसे संस्कारी, उद्योगी वीर को किसने स्वामी दयानन्द के ऋषि जीवन पर लट्टू कर दिया? सांसारिक मान, पदवी और शोभा को किसने उनसे छुड़ाकर, एक मात्र योग्य साधनों की ओर झुका दिया? क्या उस संस्कारी, पुरुषार्थी को जो ''यूनीवर्सटी'' की सर्व परीक्षाओं में प्रथम ही रहा करता था, वकालत की परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन था? क्या वह ''डिपटी कमिश्नर'' साधारण यत्न करने पर नहीं हो सकता था? क्या यदि वह पुस्तक समय अनुकूल लिखता तो उसकी पश्चिमी लोगों की ओर से और भी विद्या उपाधियां न मिलतीं? यह सब कुछ उसको मिल सकता था, परन्तु न मिला, उससे किसी ने छीना नहीं किन्तु उसने दंभ रहित निष्काम वैरागी की तरह अपनी इच्छा से त्याग दिया। क्या किसी शास्त्रार्थ में हार कर उसने संस्कृत पढ़ने का प्रण किया था? क्या उसके अन्तरीय संशय किसी पुस्तक के पाठ करने से निवृत्त हुए थे? उसके कान में किस ने गुरुमन्त्र दिया था कि दयानन्द के ऋषि जीवन को तुमने अपने जीवन में धारण करना? क्या उससे यह सर्व क्रिया बिना ही निमित्त हो रही थी? नहीं नहीं कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता, उत्तम शक्ति रखने वाले गुरुदत्त के आत्मा को एक अन्य आत्मा ने यह सब कुछ करने के लिए बिन बोले प्रेरा था। एक ईश्वरीय बलधारी आत्मा की ही शक्ति थी कि गुरुदत्त से आत्मा की काया पलटा दे और यह काया पलटाने वाला महर्षि योगी दयानन्द का ही बलवान् आत्मा था।

महर्षि का जब अजमेर में मृत्यु समय आ रहा था, तो विद्यार्थी गुरुदत्त मन की आंखों से इस अद्भुत दृश्य को देख रहा था। जिस शान्ति और भय रहित रीति से ऋषि ने प्राण त्यागे, वह शान्ति और निर्भयता गुरुदत्त के संशयात्मिक मन को ईश्वरसत्ता का न भूलने वाला उपदेश दे रही थी। उधर ऋषि का आत्मा शरीर छोड़ रहा था इधर गुरुदत्त का आत्मा नास्तिकपन से डोल रहा था। कई पुरुषों को गुरुदत्त ने मरते देखा, परन्तु किसी की मौत का उस को स्मरण भी न रहा। दयानन्द की मौत एक संसारी पुरुष की मौत न थी, यह एक ब्रह्मोपासक योगी की मृत्यु थी। उस योगी की, जो आयुभर उपासना द्वारा ईश्वरीय बल आत्मा में धारण करता रहा हो, मृत्यु का रूप भयानक नहीं किन्तु भद्र ही प्रतीत होता है। उपासक के तपस्वी आत्मा को भय कहीं दृष्टि नहीं पड़ता। दयानन्द के निर्भय आत्मा ने शरीर छोड़ते हुए गुरुदत्त को दर्शा दिया कि योगी इस प्रकार मृत्यु पर विजय पाया करते हैं। उपासना से जो बल प्राप्त हुआ है उसको प्रत्यक्ष कर योगी दयानन्द की मौत ने दिखा दिया। गुरुदत्त को निश्चय हो गया कि ईश्वर ही महान् शक्ति है जिस से बल धारण करने पर एक मनुष्य मृत्यु के समय निर्भय हो बिन बोले आकर्षण द्वारा दूसरे आत्मा को वशीभूत करके नव जीवन का उपदेश दे सकता है। ऋषि के आत्मा को बल देने वाली शक्ति सदैव सबको बल देने के लिए विद्यमान् है। इसी अखण्ड शक्ति से बल लाभ करने के साधन गुरुदत्त करता रहा। इसी शक्ति की निर्माण की हुई वेद विद्या को गुरुदत्त, विद्यार्थीवत् पढ़ता रहा। इसी शक्ति के धारण करने वाले दयानन्द रूपी जीवन को गुरुदत्त अपना जीवन आदर्श समझता रहा। ईश्वर उपासना के कारण वह, पुरुषार्थ, ज्ञान और प्रेम से युक्त होता हुआ अपने क्षणभङ्गुर जीवन में विद्युत की सी उत्तम चमक दर्शा गया।

ब्रह्मयज्ञ की सिद्धि, ब्रह्मोपासना का फल अखण्ड ब्रह्मसूर्य की तेजोमयी ज्योति का प्रकाश ऋषि ने अपनी मृत्यु पर दिखा दिया। महात्मा गुरुदत्त ने उसको अनुभव करते हुए अपनी काया सचमुच पलटा ली। क्या हम इस समय जिनके जीवन मलीन हो रहे हैं, क्या हम जो दुःखों से पीड़ित और क्लेशों से व्याकुल हैं, इन प्रत्यक्ष दृष्टान्तों से कुछ शिक्षा जीवनसुधार के लिए प्राप्त नहीं करेंगे? जीते जागते आत्माओं पर काम करने और उनको धर्म पथ में लगाने के लिए मनुष्य के मूल धन आत्मा पर विजय पाने और अपनी काया पलटाने के लिए, भय, सन्देह और निराश जीवन के कुटिल मार्ग से हटकर आशामय, निर्भय जीवन व्यतीत करने के लिए, कायर आत्मा को शूरवीर, महाबली बनाने के लिए, बन्धुगण आओ, हम भी सर्वोत्तम बलमय महान् शक्ति से, ब्रह्मयज्ञ रचते हुए आत्म बल धारण करने की सच्ची प्रतिज्ञा करें।

पृष्ठ ४ का शेष.....

भी स्थानीय संस्था निराश्रितों को आश्रय देने से मना न कर दे तब तक ईसाई मिशनरी उन्हें अपना नहीं सकती।

समाज सुधारक डॉ. अम्बेडकर को ईसाई समाज द्वारा अनेक प्रलोभन ईसाई मत अपनाने के लिए दिए गए मगर यह जमीनी हकीकत से परिचित थे की ईसाई मत ग्रहण कर लेने से भी दलित समाज अपने मुलभुत अधिकारों से वंचित ही रहेगा। डॉ. आंबेडकर का चिंतन कितना व्यवहारिक था यह आज देखने को मिलता है।''जनवरी १९८८ में अपनी वार्षिक बैठक में तमिलनाडु के बिशपों ने इस बात पर ध्यान दिया कि धर्मांतरण के बाद भी अनुसूचित जाति के ईसाई परंपरागत अछूत प्रथा से उत्पन्न सामाजिक व शैक्षिक और आर्थिक अति पिछड़ेपन का शिकार बने हुए हैं। फरवरी १९८८ में जारी एक भावपूर्ण पत्र में तमिलनाडु के कैथलिक बिशपों ने स्वीकार किया 'जातिगत विभेद और उनके परिणामस्वरूप होने वाला अन्याय और हिंसा ईसाई सामाजिक जीवन और व्यवहार में अब भी जारी है। हम इस स्थिति को जानते हैं और गहरी पीड़ा के साथ इसे स्वीकार करते हैं।' भारतीय चर्च अब यह स्वीकार करता है कि एक करोड़ ६० लाख भारतीय ईसाइयों का लगभग ६० प्रतिशत भाग भेदभावपूर्ण व्यवहार का शिकार है। उसके साथ दूसरे दर्जे के ईसाई जैसा अथवा उससे भी बुरा व्यवहार किया जाता है। दक्षिण में अनुसूचित जातियों से ईसाई बनने वालों को अपनी बस्तियों तथा गिरिजाघर दोनों जगह अलग रखा जाता है। उनकी 'चेरी' या बस्ती मुख्य बस्ती से कुछ दूरी पर होती है और दूसरों को उपलब्ध नागरिक सुविधओं से वंचित रखी जाती है। चर्च में उन्हें दाहिनी ओर अलग कर दिया जाता है। उपासना (सर्विस) के समय उन्हें पवित्र पाठ पढने की अथवा पादरी की सहायता करने की अनुमति नहीं होती। बपतिस्मा, दृढ़िकरण अथवा विवाह संस्कार के समय उनकी बारी सबसे बाद में आती है। नीची जातियों से ईसाई बनने वालों के विवाह और अंतिम संस्कार के जुलूस मुख्य बस्ती के मार्गों से नहीं गुजर सकते। अनुसूचित जातियों से ईसाई बनने वालों के कब्रिस्तान अलग हैं। उनके मृतकों के लिए गिरजाघर की घंटियां नहीं बजतीं, न ही अंतिम प्रार्थना के लिए पादरी मृतक के घर जाता है। अंतिम संस्कार के लिए शव को गिरजाघर के भीतर नहीं ले जाया जा सकता। स्पष्ट है कि 'उच्च जाति' और 'निम्न जाति' के ईसाइयों के बीच अंतर्विवाह नहीं होते और अंतर्भोज भी नगण्य हैं। उनके बीच झड़पें आम हैं। नीची जाति के ईसाई अपनी स्थिति सुधारने के लिए संघर्ष छेड़ रहे हैं, गिरजाघर अनुकूल प्रतिक्रिया भी कर रहा है लेकिन अब तक कोई सार्थक बदलाव नहीं आया है। ऊंची जाति के ईसाइयों में भी जातिगत मूल याद किए जाते हैं और प्रछन्न रूप से ही सही लेकिन सामाजिक संबंधों में उनका रंग दिखाई देता है।

महान विचारक वीर सावरकर धर्मान्तरण को राष्ट्रान्तरण मानते थे। आप कहते थे ''यदि कोई व्यक्ति धर्मान्तरण करके ईसाई या मुसलमान बन जाता है तो फिर उसकी आस्था भारत में न रहकर उस देश के तीर्थ स्थलों में हो जाती है जहाँ के धर्म में वह आस्था रखता है, इसलिए धर्मान्तरण यानी राष्ट्रान्तरण है।

इस प्रकार से प्रायः सभी देशभक्त नेता ईसाई धर्मान्तरण के विरोधी रहे है एवं उसे राष्ट्र एवं समाज के लिए हानिकारक मानते है।

[i] Read Congregation for the doctrine of the faith: Instruction on prayers for healing published from Vatican

[ii] Ref- The final Verdict by Aroup Chatterje

[iii] Popular Christianity in India: Riting between the Lines edited by Selva J-Raj] Corinne G- Dempsey-Page 129

[iv] Vatican hid Pope's Parkinson's disease diagnosis for 12 years: News published in The telegraph] Rome on 19 Mar 2006

[v] Pulliam Bailey] Sarah (25 March 2015)- "Televangelist Benny Hinn has been admitted to the hospital for heart trouble" The Washington Post-

[vi] सप्तम समुल्लास

[vii] Religious cleansing of Hindus [Dr- Koenraad ELST] speaking in The Hague] 7 Feb- 2004] at the Agni conference on the persecution of Hindus in various countries-

[viii] The Niyogi committee gave the following recommendations: [2]

(1) those missionaries whose primary object is proselytization should be asked to withdraw and the large influx of foreign missionaries should be checked;

(2) the use of medical and other professional services as a direct means of making conversions should be prohibited by law;

(3) attempts to convert by force or fraud or material inducements or by taking advantage of a person's inexperience or confidence or spiritual weakness or thoughtlessness or by penetrating into the religious conscience of persons for the purpose of consciously altering their faith should be absolutely prohibited;

(4) the Constitution of India should be amended in order to rule out propagation by foreigners and conversions by force] fraud and other illicit means;

(5) legislative measures should be enacted for controlling conversion by illegal means;

(6) rules relating to registration of doctors, nurses and other personnel employed in hospitals should be suitably amended to provide a condition against evangelistic activities during professional service; and

(7) Circulation of literature meant for religious propaganda without approval of the State Government should be prohibited- [Vindicated by Time: The Niyogi Committee Report] (edited by Sita Ram Goel, 1998)

[ix] Biography of Swami Dayanand

[x] M-K- Gandhi] Christian Missions] Ahmedabad, 1941 and Collected Works

[xi] Socio&Religious Reform Movements in British India by K W Jones

[xii] Caste based Discrimination inside church is common practice- Read news published as title "SC Christians Allege Caste Discrimination" in The New Indian Express dated Wednesday, September 30, 2015.

वेदोज्ज्वला

-आचार्य राहुलदेव

(नववर्ष पर विशेष)

विषय - इस मन्त्र में नववर्ष कैसा हो और नववर्ष का प्रारम्भ कैसे करें इस विषय पर कहा गया है।

ऋषि- अथर्वा। देवता - अष्टका। छन्दः - अनुष्टुप्।

आयमगन्त्संवत्सरः पतिरेकाष्टके तव।
सा न आयुष्मती प्रजां रायस्पोषेण सं सृज।। ८।।

-अथर्ववेद ३/१०/८

पदपाठः -

आ। अयम्। अगन। सम्वेवत्सरः। पतिः। एकेअष्टके। तव। सा। नः।
आयुष्मतीम्। प्रजाम्। रायः। पोषेण। सम्। सृज।।

अन्वयः -

अयम् संवत्सर आ अगन्त् एकाष्टके तव पति सा नः आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण संसृज।

पदार्थः -

अयम्	-	यह
संवत्सर	-	वर्ष, उत्तम निवास वाला
आ अगन्	-	आ चुका है (आगमत्)
एकाष्टके	-	ऊषा, दिन की प्रथम अष्टिका
तव पति	-	तेरा पति
सा नः	-	वह, हमें
आयुष्मतीं	-	आयुष्मान्, दीर्घजीवी
प्रजां	-	प्रजाओं को
रायः	-	धन से
पोषेण	-	पोषण के द्वारा
संसृज	-	युक्त कर, निर्माण कर

वेदभाष्य से - प्रत्येक वर्ष के आरम्भ में सोकर उठने पर हमें यह धारणा करनी चाहिए कि अयम्-यह संवत्सरः- हमारे निवास को उत्तम बनानेवाला वर्ष आ अगन्-आया है-आज नववर्ष का आरम्भ होता है। हे एकाष्टके दिन के प्रथम व मुख्य अष्टकवाली उषे। यह तव पतिः - तेरा पति है - तू इसकी पत्नी है। तू ही वस्तुतः इसे संवत्सर- उत्तम निवासवाला बनाती है। २. सा- वह तू नः- हमारी आयुष्मतीं प्रजाम् दीर्घजीवी सन्तानों को रायस्पोषेण संसृज-धन के पोषण से युक्त कर। प्रतिदिन प्रातः काल प्रबुद्ध होती हुई हमारी सन्तानें दीर्घजीवी व धन-धान्य- सम्पन्न बनें।

भावार्थः - वर्ष के प्रारम्भिक दिन हम उषा जागरण का व्रत लें तथा निश्चय करें कि अपने जीवन को उत्तम बनाकर हम सन्तानों को दीर्घजीवी व सम्पन्न बनाने के लिए यत्नशील होंगे।

व्याख्या - इस अथर्ववेदीय मन्त्र में नववर्ष पर विचार किया गया है। वैदिक भाषा में वर्ष के लिये सम्वत्सर शब्द का प्रचलन बहुत प्राचीन है। कई विद्वान इन सम्वत्सरों के भिन्न-भिन्न नाम से बोलते है। वस्तुतः सम्वत्सर शब्द बारह आदित्य (माह) से बने एक वर्ष के काल का द्योतक है। सम्वत्सरः ''सम्यक् निवासकः'' अर्थात् जो हमे अच्छे रहने दे, अच्छे से रखे। वह सम्वत्सर कहाता है। सम् वर्तते वा सरति सः ''सम्वत्सरः''। जो अच्छे वर्तने दे और सरकता रहे वह सम्वत्सर कहाता है।

मन्त्र का प्रथम भाग है - ''अयम् सम्वत्सरः आगमत्'' अर्थात् यह सम्वत्सर आया है। अर्थात् पहला सम्वत्सर समाप्त हो गया है और दूसरा सम्वत्सर लग चुका है। नये वस्तुओं की उत्सुकता सब में होती है। संसार में प्रत्येक व्यक्ति नये वस्तुओं से प्रसन्नता होता है। नयापन सभी को अच्छा लगता है। अपने जन्मदिवस पर व्यक्ति को उस दिन कुछ अलग लगता है। जब उसे जन्मदिवस की बधाई दी जाती है वह प्रसन्न होता है। जैसे व्यक्ति नया घर, नया वस्त्र, नई गाडी, नई घडी आदि वस्तुओं से प्रसन्न होता है। ऐसे ही नये वर्ष से भी उसे प्रसन्नता होती है। एक उमंग होती है। जिनका पीछला वर्ष ठीक नहीं चल रहा था उसे नववर्ष से बहुत आशा रहती है कि यह वर्ष तो ठीक होगा, मैं आगे जाऊँगा। और जिनका पीछला वर्ष ठीक गया उनको और अच्छा जाने की उम्मीद होती है। कइयों को नया काम शुरु करने और कुछ अलग करने की इच्छा रहती है उद्देश्य होता है। तो नववर्ष से व्यक्ति उत्थान वाला उन्नति वाला परिवर्तन चाहता है। इसलिये मन्त्र में कहा गया है कि भाई जिस नववर्ष, नव सम्वत्सर की प्रतीक्षा कर रहे थे वह आ गया है। इसलिए हम सब बहुत उत्सुक है और प्रसन्न हैं।

मन्त्र का दूसरा भाग है - ''पतिः एकाष्टके तव'' - इस सम्वत्सर की पत्नी ऊषा है यह सम्वत्सर उसका पति है, जो इसे वह रहने योग्य बनाती है तभी यह सम्भवतः सम्वत्सर कहाता है। क्योंकि सम्वत्सर के

क्रमशः पृ. ८.....

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९४१५३६५५७६, सम्पादक-९४५१८८१९७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

आर्य समाज यमला अर्जुनपुर कैसरगंज बहराइच का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज यमला अर्जुनपुर कैसरगंज बहराइच का १०६वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ३ ४ व ५ अप्रैल २०२३ को मनाने का निश्चय किया गया है। जिसमें आमंत्रित मूर्धन्य विद्वान व भजनोंपदेशक श्री शंकर मिश्र कासगंज, श्री भूपेंद्र सिंह अलीगढ़, स्वामी शुद्ध बोध सरस्वती हरियाणा, आचार्य विमल किशोर आर्य लखनऊ, श्री ओंकारनाथ शास्त्री बहराइच आदि हैं।

कार्यक्रम में प्रातः ८:०० से १०:०० तक यज्ञ एवं प्रवचन प्रातः १०:०० बजे से मध्यान्ह १२:०० बजे तक व्याख्यान एवं भजनोंपदेश सायं ५:०० बजे से ६:०० बजे तक शंका समाधान रात्रि ६:०० बजे से ११:०० बजे तक व्याख्यान व भजनोंपदेश आदि होंगे।

सभी आर्य बंधु बांधव वैदिक विद्वानों के प्रवचनों का श्रवण कर व शंका समाधान सत्र में आज के ज्वलंत प्रश्नों पर अपनी जिज्ञासा का निदान प्राप्त कर जीवन सुखमय बनाएं।

पृष्ठ ७ का शेष.....

३६५ दिन में प्रतिदिन यह ऊषा आती है। यह ऊषा और सम्वत्सर दोनों हमारे लिये आवश्यक है। सम्वत्सर हमारी आयु को बताता है हम कितने वर्ष के हुये। ऊषा हमारे स्वास्थ्य को बताती है। क्योंकि हम कब उठते हैं यह देखती रहती है।

मन्त्र में तीसरा भाग है - ''सा नः आयुष्मतीम् प्रजाम्'' वह ऊषा हम प्रजाओं की आयु को बढाये और सम्वत्सर आयु गिनता रहे। मन्त्र में बहुत गूढ़ बाते कही है क्योकि ऊषा देवी अमृत कलश लेकर आती है। जो इस ऊषा काल में सोता रहता है वह अमृत से वंचित रह जाता है। अर्थात् ऊषाकाल में शयन करने वाले की आयु घटती है। इसलिये सभी महापुरुष कदाचित हमें प्रातः सूर्योदय से पहले उठने को कहते हैं क्योंकि ऊषाकाल में ऊषादेवी जागने वालों को आयुष्मती करती है। अमृत बेले जाग अमृत बरस रहा। वास्तव में ऊषाकाल अमृत काल है। इस समय जो जागता है सो पाता है जो सोता है सो खोता है।

मन्त्र का चौथा भाग है ''सा नः रायस्पोषेण संसृज'' वह ऊषा हमें रायः धन से परिपुष्ट करे। प्रातःकाल में आप वैदिक दिनचर्या के अन्तर्गत जिन पाँच मन्त्रों का पाठ करते हैं। अर्थात् आप यदि वैदिक दिनचर्या नहीं जानते हैं तो आपको आर्य विद्वानों की कर्मकाण्ड और नित्य कर्म विधि पुस्तक देखनी चाहिये। वहाँ पर आपको प्रातःकाल उठते ही पांच मन्त्रों को पढने की व्यवस्था मिलेगी। आप लोग भी उन मन्त्रों को याद कर लें। या प्रातःकाल उठते ही पुस्तक देखकर मन्त्र पाठ करें। मेरी लिखी हुई वैदिक कर्मकाण्ड पद्धति भी देख सकते है मैंने उसमें पद्यानुवाद और अर्थ दोनों दिया है। मैं यह बात इसलिये लिख रहा हूँ उन पाँच मन्त्रों में आपको एक ऐसा शब्द है मिलेगा जो बार बार दोहराया गया है। और वह शब्द है भग। भग शब्द ऐश्वर्य का वाचक वेद कहता है प्रातःकाल से ही ऐश्वर्य मांगो यह नववर्ष का मन्त्र भी कह रहा है कि हे ऊषा तू हमे नववर्ष की तरह सभी दिन को नया मानकर हमें प्रतिदिन धन से परिपुष्ट कर। हमारी सन्ताने और हम आयु और धनधान्य से पुष्ट हों।

आपके लिये यह नववर्ष भी ऊत्तम आयु और धनधान्य से परिपुष्ट करने वाला होवे। प्रभु से प्रार्थना है कि आपका यह नववर्ष अच्छा व्यतीत हो। इसमें और अधिक उत्साह, नव चेताना, ऊर्जा और बढोतरी है। देखिये आप ही विचार कीजिए वेद के अतिरिक्त संसार के अन्य मतावलम्बियों के मत पुस्तक में नववर्ष सम्बन्धित ऐसा वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त हो सकता है? इसलिये वेद अपौरुषेय है। इसलिये वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा गया है। यदि हम वेद से जुडेंगे तो हमारा प्रत्येक दिन और प्रत्येक वर्ष सुखद होगा। इसलिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नववर्ष के महत्व समझकर अपने असली नववर्ष को पहचाने और उस पर गर्व करें। आप सभी को नववर्ष की बहुत-बहुत शुभकामनायें।

चलभाष-९६८१८४९४१९

विक्रमी संवत् 2079 एवं सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123 का अन्तिम दिन, नये संवत्सरों का आरम्भ''

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

दिनांक २१-३-२०२३ विक्रमी सम्वत् २०७९ का अन्तिम दिवस है। नया विक्रमी संवत् २०८० आरम्भ हो रहा है। इसी प्रकार से सृष्टि के आरम्भ वा प्रथम दिवस से प्रचलित सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,०१२३ का भी अन्तिम दिवस है और नया सृष्टि संवत्सर आरम्भ हो रहा है। जब हम विक्रमी सम्वत् २०७९ पर दृष्टि डालते हैं तो हमें स्मरण आता है कि हमने इस वर्ष में प्रत्येक दिन एक सामवेद मन्त्र का डा. आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी का किया हुआ मन्त्र का पदार्थ एवं भावार्थ फेस बुक व व्हाट्शप के अपने लगभग ८०० मित्रों सहित व्हाट्शप के लगभग ८० समूहों में भी प्रतिदिन प्रेषित व प्रचारित किया है। इसके साथ ही सप्ताह में एक व दो दिन व अधिक भी ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज व वैदिक मान्यताओं पर एक या दो लेख लिखकर फेसबुक, इमेल व व्हाट्शप पर भेजने सहित आर्यसमाज की पत्रपत्रिकाओं एवं कुछ समाचार नैट की साइटों को भी प्रेषित करते रहे हैं जहां समय समय पर इनका प्रकाशन होता रहा है। इस अवधि में आर्यसमाज एवं इतर अनेक पत्र पत्रिकाओं में हमारे लेख प्रकाशित हुए हैं जिनमें आर्यजगत, आर्यमर्यादा, आर्य मित्र, युवा उद्घोष, दयानन्द सन्देश, आर्ष ज्योति, पवमान, आर्य प्रतिनिधि, वैदिक राष्ट्र आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं।

हमने विक्रमी सं. २०७९ में वैदिक साधन आश्रम तपोवन के पांच दिवसीय ग्रीष्मोत्सव एवं शरदुत्सव में भी भाग लिया। आश्रम द्वारा प्रत्येक वर्ष मार्च के महीने में सामवेद पारायण एवं गायत्री महायज्ञ का लगभग १० दिवसीय आयोजन किया जाता है। इस यज्ञ में भी हम अपनी सुविधानुसार एक व अधिक दिन उपस्थित हुए हैं और उनके विस्तृत विवरण वा समाचार लिखकर फेसबुक व व्हटशप आदि के द्वारा प्रचारित किए हैं। इसी प्रकार हम गुरुकुल पौंधा एवं द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में भी सम्मिलित हुए हैं और यहां हमने जो देखा व सुना, उसे भी फेसबुक एवं व्हाट्शप आदि के माध्यम से प्रचारित किया है। यद्यपि वर्ष भर हम शारीरिक दुर्बलता से ग्रस्त रहे तथापि हम कभी-कभी आर्यसमाज धामावाला के सत्संग एवं उत्सव आदि में सम्मिलित होते रहे हैं और यहां सुने आर्य विद्वानों के सम्बोधनों को लेख के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित किया है। देहरादून में वैदिक साधन आश्रम तपोवन के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी अपने निवास पर प्रत्येक वर्ष सितम्बर के महीने में एक वेद का पारायण यज्ञ कराते हैं। इस आयोजन में अनेक विद्वानों के प्रवचन एवं भजन आदि भी होते हैं। यह क्रार्यक्रम भी आर्यसमाज के उत्सव जैसा ही होता है। शर्मा जी अपने निवास दून-वाटिका उपनिवेश में एक शोभा यात्रा भी निकलते हैं। हमें भी इस शोभायात्रा एवं पारायण यज्ञ में कुछ समय के लिये भाग लेने का अवसर मिला है। ऐसे कुछ अन्य आयोजनों में भी हमने भाग लिया जिससे हमें विद्वानों एवं ऋषिभक्तों की संगति करने का अवसर मिला एवं वेद एवं ऋषि दयानन्द सहित आर्यसमाज की मान्यताओं पर विद्वानों के विचारों को सुननेका अवसर भी मिला है। अनेक भजनोपदेशकों को भी हमने इस वर्ष सुना है। इससे भी हमें आत्मिक लाभ हुआ है। टंकारा में फरवरी २०२३ में जो बोधोत्सव का आयोजन हुआ, उसे हमने आर्यसन्देश टीवी के माध्यम से देखा व सुना। इसी प्रकार ऋषि दयानन्द के २०० वें जन्म दिवस १२ फरवरी, २०२३ के अवसर पर दिल्ली में आयोजन, जिसमें देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी सम्मिलित हुए थे, उस कार्यक्रम को हमने आर्यसन्देश टीवी पर देखा व सुना।

इस वर्ष हम वैदिक साधन आश्रम तपोवन की मासिक पत्रिका पवमान के सम्पादन कार्य से भी जुड़े रहे। बीच बीच में तपोवन तथा गुरुकुल पौंधा जाते रहे। इसका भी हमें सन्तोष है। हमने यह जो कुछ किया उसमें ईश्वर की प्रेरणा, उसकी दी हुई शक्ति व सामर्थ्य और हमारी अभिरूचि कारण रही है। हम जीवन की इस छोटी सी उपलब्धि से सन्तुष्ट हैं। यदि हमारा स्वास्थ्य और अच्छा होता तो हम टंकारा, अजमेर एवं उदयपुर के कार्यक्रमों में जाने की भी इच्छा रखते थे, परन्तु जा नहीं सके। यदि स्वस्थ रहते और अधिक कार्य करते जो कि नहीं कर सके। इन सब कार्यों को जो हम कर सके, को करने के लिए हम ईश्वर का धन्यवाद करते हैं। परमात्मा की कृपा से हमारा विक्रमी संवत् २०७९ एवं सृष्टि संवत १,९६,०८,५३,१२३ का समय अच्छा व्यतीत हुआ है। इस वर्ष हमें हमारे अनेक आर्य मित्रों का भी भरपूर सहयोग मिला है। ईश्वर सहित सभी मित्रों एवं परिजनों का कोटिशः धन्यवाद है।

इसी के साथ हम विक्रमी संवत् २०७९ को विदाई देते हैं और आगामी विक्रमी सम्वत् २०८० एवं सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,१२४ का स्वागत करते हैं। सभी मित्रों को आगामी नववर्ष वा संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस,
5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।